अपठित बोध

अपठित गद्यांश पर चिंतन क्षमता एवं अभिव्यक्ति कौशल पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्न

अपठित गद्यांश

निर्देश–निम्नलिखित गद्यांशों को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सही उत्तर विकल्प चुनकर लिखिए–

(1) मनुष्य को निष्कामभाव से सफलता-असफलता की चिंता किए बिना अपने कर्तव्य का पालन करना है। आशा या निराशा के चक्र में फँसे बिना उसे निरंतर कर्तव्यरत रहना है। किसी भी कर्तव्य की पूर्णता पर सफलता अथवा असफलता प्राप्त होती है। असफल व्यक्ति निराश हो जाता है, किंतु मनीषियों ने असफलता को भी सफलता की कुंजी कहा है। असफल व्यक्ति अनुभव की संपत्ति अर्जित करता है, जो उसके भावी जीवन का निर्माण करती है। जीवन में अनेक बार ऐसा होता है कि हम जिस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए परिश्रम करते हैं, वह पूरा नहीं होता। ऐसे अवसर पर सारा परिश्रम व्यर्थ हो गया-सा लगता है और हम निराश होकर चुपचाप बैठ जाते हैं। उद्देश्य की पूर्ति के लिए दोबारा प्रयत्न नहीं करते। ऐसे व्यक्ति का जीवन धीरे-धीरे बोझ बन जाता है। निराशा का अंधकार न केवल उसकी कर्म-शक्ति, वरन् उसके समस्त जीवन को ही ढक लेता है। निराशा की गहनता के कारण लोग कभी-कभी आत्महत्या तक कर बैठते हैं। मनुष्य का जीवन धारण करके कर्म-पथ से कभी विचलित नहीं होना चाहिए। विघ्न-बाधाओं की, सफलता-असफलता की तथा हानि-लाभ की चिंता किए बिना कर्तव्य के मार्ग पर चलते रहने में जो आनंद एवं उत्साह है, उसमें ही जीवन की सार्थकता है, ऐसा जीवन ही सफल है।

1. मनुष्य को किस प्रकार कर्तव्य पालन करना चाहिए–
(क) निष्कामभाव से
(ख) सफलता-असफलता की चिंता किए बिना
(ग) आशा-निराशा के चक्र में फँसे बिना
(घ) उपर्युक्त सभी।

2. मनीषियों ने सफलता की कुंजी किसे कहा है–
(क) धन को
(ख) परिश्रम को
(ग) असफलता को
(घ) शारीरिक बल को।

3. निम्नलिखित कथन (A) तथा कारण (R) को ध्यानपूर्वक पढ़िए। उसके बाद दिए गए विकल्पों में से कोई एक सही विकल्प चुनकर लिखिए–

कथन (A)–असफल व्यक्ति अनुभव की संपत्ति अर्जित करता है।
कारण (R)–यह संपत्ति उसके भावी जीवन का निर्माण करती है।
(क) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों गलत हैं।
(ख) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।
(ग) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) उसकी गलत व्याख्या करता है।
(घ) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या करता है।

4. कैसे व्यक्तियों का जीवन धीरे-धीरे बोझ बन जाता है–
(क) जो असफल होने पर दोबारा प्रयत्न नहीं करते
(ख) जो परिश्रम से जी चुराते हैं
(ग) जो नित्य व्यायाम नहीं करते
(घ) जो धन-दौलत नहीं कमाते।

5. जीवन की सार्थकता किसमें है–
(क) हर समय सोते रहने में
(ख) बहुत सारा धन कमाने में
(ग) कर्तव्य-मार्ग पर चलने के आनंद में
(घ) दूसरों से अपना काम निकालने में।

उत्तर— **1.** (घ) **2.** (ग) **3.** (घ) **4.** (क) **5.** (ग)।

(2) वैज्ञानिक और औद्योगिक विकास के उद्दंड परिणामों से अपने को सुरक्षित रखकर हम उनका उपयोग अपनी रीति से किस प्रकार करें–इस बारे में दो बातों का हमें बराबर ध्यान रखना है। पहली बात तो यह है कि हर प्रकार की प्रकृतिजन्य और मानवकृत विपदाओं के पड़ने पर भी हम लोगों की सृजनात्मक शक्ति कम नहीं हुई। हमारे देश में साम्राज्य बने और मिटे, विभिन्न संप्रदायों का उत्थान-पतन हुआ, हम विदेशियों से आक्रांत और पद-दलित हुए, हम पर प्रकृति और मानवों ने अनेक बार मुसीबतों के पहाड़ ढा दिए, पर फिर भी हम लोग बने रहे, हमारी संस्कृति बनी रही और हमारा जीवन एवं सृजनात्मक शक्ति बनी रही। हम अपने दुर्दिनों में भी ऐसे मनीषियों और कर्मयोगियों को पैदा कर सके, जो संसार के इतिहास के किसी युग के अत्यंत उच्च आसन के अधिकारी होते। अपनी दासता के दिनों में हमने गांधी जैसे कर्मठ, धर्मनिष्ठ क्रांतिकारी को, रवींद्र जैसे मनीषी कवि को और अरविंद तथा रमण महर्षि जैसे योगियों को पैदा किया और उन्हीं दिनों में हमने ऐसे अनेक उद्भट विद्वान और वैज्ञानिक पैदा किए, जिनका सिक्का संसार मानता है। हमारी सामूहिक चेतना ऐसे नैतिक आधार पर ठहरी हुई है, जो पहाड़ों से भी मज़बूत, समुद्रों से भी गहरी और आकाश से भी अधिक व्यापक होने के कारण ही हम अपने आध्यात्मिक और बौद्धिक गौरव को बनाए रख सके।

दूसरे, संस्कृति अथवा सामूहिक चेतना ही हमारे देश का प्राण है। इसी नैतिक चेतना के सूत्र से हमारे नगर और ग्राम, हमारे देश और संप्रदाय, हमारे विभिन्न वर्ग और जातियाँ आपस में बँधी हुई हैं। बापू ने जन-साधारण को बुद्धिजीवियों के नेतृत्व में क्रांति के लिए तत्पर करने के लिए इसी नैतिक चेतना का सहारा लिया था। जन-साधारण के हृदय में धड़कती चेतना को क्रांति की शक्ति बनाने में ही बापू की दूरदर्शिता थी और इसी में उनकी सफलता भी।

1. हमें किस बात ने सोचने के लिए मज़बूर किया–
(क) प्राकृतिक आपदाओं ने
(ख) दूसरे देशों की उन्नति ने
(ग) वैज्ञानिक और औद्योगिक विकास के दुष्परिणामों ने
(घ) देश में बढ़ रहे भ्रष्टाचार ने।

2. विपरीत परिस्थितियों और आपदाओं में भी भारतीयों ने किसे बनाए रखा–
(क) अपनी संस्कृति और सृजनात्मक शक्ति को
(ख) अपनी एकता और अखंडता को
(ग) परस्पर लड़ने के स्वभाव को
(घ) अत्याचार सहने की शक्ति को।

3. **निम्नलिखित कथन (A) तथा कारण (R) को ध्यानपूर्वक पढ़िए। उसके बाद दिए गए विकल्पों में से कोई एक सही विकल्प चुनकर लिखिए–**

कथन (A)–हमने अनेक उद्भट विद्वान और वैज्ञानिक उत्पन्न किए।

कारण (R)–उनका सिक्का संसार मानता है।

(क) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) गलत है।
(ख) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।
(ग) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।
(घ) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या करता है।

4. **गद्यांश में किस महापुरुष का वर्णन नहीं आया है–**
(क) विवेकानंद (ख) गांधीजी
(ग) रवींद्रनाथ टैगोर (घ) अरविंद।

5. **हमारी सामूहिक चेतना का नैतिक आधार है–**
(क) पहाड़ों से भी मज़बूत (ख) समुद्र से भी गहरा
(ग) आकाश से भी व्यापक (घ) ये सभी।

उत्तर— **1.** (ग) **2.** (क) **3.** (घ) **4.** (क) **5.** (घ)।

(3) ज़ाकिर साहब से मिलने के लिए समय प्राप्त करने में देर नहीं लगती थी। एक बार मेरी एक सहेली ऑस्ट्रेलिया से भारत की यात्रा करने आई। अपने देश में वे भारतीयों की शिक्षा के लिए धन एकत्र किया करती थीं। एक भारतीय बच्चे को उन्होंने गोद भी ले लिया था। जाकिर साहब ने तुरंत उनसे मिलने के लिए समय दिया और देर तक बैठे उनसे उनके कार्य, उनकी भारत-यात्रा के बारे में सुनते रहे। हिंदी सीखने के बारे में एक बार जब उनसे प्रश्न किया गया तो उन्होंने कहा, "मेरे परिवार के एक बच्चे ने जब गांधी जी से ऑटोग्राफ़ माँगा तो उन्होंने अपने हस्ताक्षर उर्दू में किए, उसी दिन से मैंने अपने मन में निश्चय कर लिया कि हिंदी-भाषियों को अपने हस्ताक्षर हिंदी में ही दिया करूँगा।"

एक बार रामलीला में जनता ने उनसे रामचंद्र जी का तिलक करने के लिए कहा। ज़ाकिर साहब खुशी से आए और तिलक किया। इस पर कुछ उर्दू अखबारों ने एतराज़ किया। ज़ाकिर साहब ने जवाब दिया, "इन नादानों को मालूम नहीं है कि मैं भारत का राष्ट्रपति हूँ, किसी खास धर्म का नहीं।"

ज़ाकिर साहब राष्ट्रपति भवन में सादगी और विनम्रता के साथ कलाप्रियता को भी ले आए थे। उनकी आँखों में ब्रिटेन के अभिमान के अवशेष शीशे के टुकड़ों के समान खटकते। उन्होंने मुगल उद्यान को न केवल सुरक्षित रखा, अपितु अपने व्यक्तित्व के वैभव से उसकी वृद्धि भी की। उनके समय में राष्ट्रपति भवन के बगीचों में 400 किस्म के नए गुलाब लगाए गए।

1. **ज़ाकिर हुसैन भारत में किस महत्त्वपूर्ण पद पर थे–**
(क) प्रधानमंत्री (ख) मुख्य न्यायाधीश
(ग) राष्ट्रपति (घ) सेनाध्यक्ष।

2. **लेखिका की सहेली किस देश से आई थीं–**
(क) ऑस्ट्रेलिया से (ख) अमेरिका से
(ग) जापान से (घ) चीन से।

3. **निम्नलिखित कथन (A) तथा कारण (R) को ध्यानपूर्वक पढ़िए। उसके बाद दिए गए विकल्पों में से कोई एक सही विकल्प चुनकर लिखिए–**

कथन (A)–एक बार रामलीला में जनता ने उनसे रामचंद्र का तिलक करने के लिए कहा।

कारण (R)–इस पर कुछ उर्दू अख़बारों ने एतराज़ किया।

(क) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) उसकी गलत व्याख्या करता है।
(ख) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों गलत हैं।
(ग) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।
(घ) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या करता है।

4. **"मैं भारत का राष्ट्रपति हूँ, किसी खास धर्म का नहीं" यह बात ज़ाकिर साहब ने किसे कही–**
(क) मुल्ला-मौलवियों को
(ख) उर्दू अख़बारों को
(ग) अपने परिवार वालों को
(घ) रामलीला समिति के अध्यक्ष को।

5. **ज़ाकिर साहब ने राष्ट्रपति भवन के बगीचे में क्या लगवाया–**
(क) चार सौ किस्म के नए गुलाब
(ख) चमेली के पौधे
(ग) पचास किस्म के गेंदे
(घ) डेहलिया की चालीस किस्में।

उत्तर— **1.** (ग) **2.** (क) **3.** (क) **4.** (ख) **5.** (क)।

(4) दैनिक जीवन में हम अनेक लोगों से मिलते हैं जो विभिन्न प्रकार के काम करते हैं–सड़क पर ठेला लगाने वाला, दूध वाला, नगर-निगम का सफ़ाईकर्मी, बस कंडक्टर, स्कूल अध्यापक, हमारा सहपाठी और ऐसे ही कई अन्य लोग। शिक्षा, वेतन, परंपरागत चलन और व्यवसाय के स्तर पर कुछ लोग निम्न स्तर पर कार्य करते हैं तो कुछ उच्च स्तर पर। एक माली के कार्य को सरकारी कार्यालय के किसी सचिव के कार्य से अतिनिम्न स्तर का माना जाता है, किंतु यदि यही अपने कार्य को कुशलतापूर्वक करता है और उत्कृष्ट सेवाएँ प्रदान करता है तो उसका कार्य उस सचिव के कार्य से कहीं बेहतर है, जो अपने काम में ढिलाई बरतता है तथा अपने उत्तरदायित्वों का निर्वाह नहीं करता। क्या आप ऐसे सचिव को एक आदर्श अधिकारी कह सकते हैं? वास्तव में पद महत्त्वपूर्ण नहीं है, बल्कि महत्त्वपूर्ण होता है कार्य के प्रति समर्पण-भाव और कार्यप्रणाली में पारदर्शिता।

1. **दैनिक जीवन में हम किन लोगों से मिलते हैं–**
(क) अच्छे लोगों से
(ख) बुरे लोगों से
(ग) विभिन्न काम करने वालों से
(घ) काम न करने वालों से।

2. **समाज में व्यक्ति का स्तर किस आधार पर निश्चित होता है–**
(क) शिक्षा के आधार पर
(ख) वेतन और परंपरागत चलन के आधार पर
(ग) व्यवसाय के आधार पर
(घ) उपर्युक्त सभी।

3. **निम्नलिखित कथन (A) तथा कारण (R) को ध्यानपूर्वक पढ़िए। उसके बाद दिए गए विकल्पों में से कोई एक सही विकल्प चुनकर लिखिए–**

कथन (A)–एक उच्च अधिकारी माली से भी निम्न स्तर का माना जाएगा।

कारण (R)–जब वह अपने उत्तरदायित्व का निर्वाह नहीं करता।

(क) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं और कारण (R), कथन (A) की सही व्याख्या करता है।
(ख) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों गलत हैं।
(ग) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।
(घ) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) उसकी गलत व्याख्या करता है।

4. **जीवन में क्या महत्त्वपूर्ण होता है–**
(क) पद (ख) कर्तव्यनिष्ठा
(ग) धन (घ) यश-प्रतिष्ठा।

5. **'उत्कृष्ट सेवाएँ' में उत्कृष्ट पद है–**

(क) संज्ञा (ख) सर्वनाम

(ग) विशेषण (घ) क्रियाविशेषण।

उत्तर— 1. (ग) 2. (घ) 3. (क) 4. (ख) 5. (ग)।

(5) पर्यावरण के समृद्ध और स्वस्थ होने से ही हमारा जीवन भी समृद्ध और सुखी होता है। हमारे पूर्वज प्रकृति की दैवीशक्ति के रूप में उपासना करते थे, उसे 'परमेश्वरी' भी कहते थे। उन्होंने पर्यावरण पर बहुत गहन चिंतन किया। जो कुछ पर्यावरण के लिए हानिकारक था, उसे आसुरी प्रवृत्ति कहा और जो हितकर था, उसे दैवी प्रवृत्ति माना। भारत के पुराने ग्रंथों में वृक्षों और वनों का चित्रण पृथ्वी के रक्षकवस्त्रों के रूप में किया गया है। उनको संतान की तरह पाला जाता था और हरे-भरे पेड़ों को अपने किसी स्वार्थ के लिए काटना पाप कहा जाता था। अनावश्यक रूप से पेड़ों को काटने पर दंड का विधान भी था। मनुष्य यह समझता है कि समस्त प्राकृतिक संपदा पर केवल उसी का आधिपत्य है। हम जैसा चाहें इसका उपभोग करें। इसी भोगवादी प्रवृत्ति के कारण मानव ने इसका इस हद तक शोषण कर लिया है कि अब उसका अस्तित्व ही संकट में पड़ गया है। वैज्ञानिक बार-बार चेतावनी दे रहे हैं कि प्रकृति और पर्यावरण की रक्षा करो, अन्यथा मानव जाति नहीं बच पाएगी। भारतीय संस्कृति में वृक्षों की रक्षा के महत्त्व को 'तुलसी और पीपल' के उदाहरणों से समझा जा सकता है। इन जीवनोपयोगी वृक्षों की देवी-देवता के समान ही पूजा की जाती है। पर्यावरण की दृष्टि से वृक्ष को परमरक्षक और मित्र बताया गया है। यह हमें अमृत प्रदान करता है, दूषित वायु को स्वयं ग्रहण करके हमें प्राणवायु देता है, मरुस्थल का नियंत्रक होता है, नदियों की बाढ़ को रोकता है और जलवायु को स्वच्छ बनाता है; इसलिए हमें वृक्षमित्र होकर जीवनयापन करना चाहिए।

1. **पूर्वजों ने आसुरी प्रवृत्ति किसे माना है–**

(क) जो पर्यावरण के लिए हानिकारक है

(ख) जो पर्यावरण के लिए हितकर है

(ग) जो जन-कल्याणकारी है

(घ) जो देवताओं के विरुद्ध है।

2. **भारत के प्राचीन ग्रंथों में वृक्षों और वनों का चित्रण किस रूप में किया है–**

(क) रमणीय स्थलों के रूप में

(ख) पृथ्वी के रक्षक वस्त्रों के रूप में

(ग) आश्रमों के रूप में

(घ) जीवन रक्षकों के रूप में।

3. **निम्नलिखित कथन (A) तथा कारण (R) को ध्यानपूर्वक पढ़िए। उसके बाद दिए गए विकल्पों में से कोई एक सही विकल्प चुनकर लिखिए–**

कथन (A)–भारत में वृक्षों को संतान की तरह पाला जाता था।

कारण (R)–पेड़ों को काटना पाप कहा जाता था।

(क) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों गलत हैं।

(ख) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) गलत है।

(ग) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।

(घ) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं और कारण (R), कथन (A) की सही व्याख्या करता है।

4. **भारतीय संस्कृति में वृक्षों की रक्षा के महत्त्व को किसके उदाहरण से समझा जा सकता है–**

(क) नीम और जामुन के (ख) आम और अमरूद के

(ग) तुलसी और पीपल के (घ) अदरक और हल्दी के।

5. **पर्यावरण की दृष्टि से वृक्ष हमारे लिए हैं–**

(क) परमरक्षक और मित्र (ख) अत्यधिक हानिकारक

(ग) बिलकुल अनुपयोगी (घ) इनमें से कोई नहीं।

उत्तर— 1. (क) 2. (ख) 3. (घ) 4. (ग) 5. (क)।

(6) आज हम सभी परेशान हैं कि समय पर वर्षा नहीं होती। कहीं अतिवृष्टि होती है, कहीं अल्पवृष्टि तो कहीं अनावृष्टि। पिछली सदी के पूर्वार्द्ध की अपेक्षा उत्तरार्द्ध में मौसम-चक्र बहुत कुछ बदल गया है और अब तो अनिश्चित-सा हो गया है। पहले हर मौसम प्रायः समय पर आता था और वर्षा नियमित रूप से होती थी। यह स्थिति केवल भारत की नहीं है, बल्कि संपूर्ण विश्व की है। कहीं इतनी वर्षा होती है कि बाढ़ के कारण जन और धन की अपार हानि होती है तो कहीं बिलकुल वर्षा नहीं होती, जिससे खड़ी फसलें खेत में नष्ट हो जाती हैं। कुछ देशों में बर्फ़ इतनी गिरती है कि जन-जीवन अस्त-व्यस्त हो जाता है। कभी-कभी जब फसल पक जाती है, तब मूसलाधार वर्षा हो जाती है, जिससे अन्न को घर लाना असंभव हो जाता है। वायुमंडल में प्रदूषण और प्रकृति-असंतुलन के कारण भारत के अधिकांश भागों में सन् 1987 में बीसवीं शताब्दी का सबसे भयंकर सूखा पड़ा। साथ ही पूर्वी भारत में बाढ़ के भीषण प्रकोप से जन-धन की काफ़ी हानि हुई। यह प्राकृतिक विपदा मनुष्य-निर्मित है; क्योंकि मनुष्य स्वयं प्रकृति का संतुलन बिगाड़ रहा है। मौसम में इस तरह के बदलाव से सामान्यजन पीड़ित हैं और वैज्ञानिक चिंतित।

वैज्ञानिक खोजों से पता चलता है कि मौसम में परिवर्तन का कारण तथा फेफड़ों में कैंसर व हृदय के रोगों एवं मानसिक तनाव आदि का मुख्य कारण है–प्रकृति में असंतुलन। हम सभी जानते हैं कि धरती पर जीवन प्रकृति-संतुलन से ही संभव हो सका है।

1. **आज हम सभी किस बात से परेशान हैं–**

(क) जनसंख्या वृद्धि से

(ख) बढ़ती महँगाई से

(ग) मौसम चक्र में आए बदलाव से

(घ) अधिक गरमी से।

2. **प्रकृति-असंतुलन के कारण सन् 1987 में भारत में क्या हुआ–**

(क) भयंकर सूखा पड़ा और भीषण बाढ़ आई

(ख) भूकंप से भारी तबाही हुई

(ग) भयंकर तूफान से जन-धन की हानि हुई

(घ) ओलावृष्टि से फ़सल नष्ट हो गई।

3. **निम्नलिखित कथन (A) तथा कारण (R) को ध्यानपूर्वक पढ़िए। उसके बाद दिए गए विकल्पों में से कोई एक सही विकल्प चुनकर लिखिए–**

कथन (A)–प्राकृतिक विपदा मनुष्य-निर्मित है।

कारण (R)–मनुष्य स्वयं प्रकृति का संतुलन बिगाड़ रहा है।

(क) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों गलत हैं।

(ख) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।

(ग) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं और कारण (R), कथन (A) की सही व्याख्या करता है।

(घ) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) उसकी गलत व्याख्या करता है।

4. **धरती पर जीवन संभव है–**

(क) पर्यावरण-प्रदूषण से (ख) मौसम में परिवर्तन से

(ग) अधिक वृक्षारोपण से (घ) प्रकृति-संतुलन से।

5. **प्रकृति-असंतुलन से होने वाली व्याधि है–**

(क) फेफड़ों का कैंसर

(ख) हृदय रोग

(ग) मानसिक तनाव

(घ) उपर्युक्त सभी।

उत्तर— 1. (ग) 2. (क) 3. (ग) 4. (घ) 5. (घ)।

(7) प्रकृति ने मानव-जीवन को बहुत सरल बनाया है, किंतु आज का मानव अपने जीवन-काल में ही पूरी दुनिया की सुख-समृद्धि बटोर लेने के प्रयास में उसको जटिल बनाता जा रहा है। इस जटिलता के कारण संसार में धनी-निर्धन, सत्ताधीश-सत्ताच्युत, संतानवान्-निस्संतान सभी सुख-शांति की चाह तो रखते हैं, किंतु राह पकड़ते हैं आह भरने की। मरु-मरीचिका के मैदान में जल की, धधकती आग में शीतलता की चाह रखते हैं। विद्वानों का विचार है कि संसार में सुख का मार्ग है–आत्मसंयम। किंतु मानव इस मार्ग को भूलकर सांसारिक पदार्थों में, इंद्रिय विषयों की प्राप्ति में आनंद ढूँढ़ रहा है–परिणामतः दुःख के सागर में डूबता जा रहा है। आत्मसंयम का मार्ग अपने में बहुत स्पष्ट है, उसकी उपादेयता किसी भी काल में कम नहीं होती। इंद्रिय-विषयों का संयम ही आत्मसंयम है। भौतिक पदार्थों के प्रति इंद्रियों का प्रबल आकर्षण मानवीय दुःखों का मूल कारण माना गया है। उपभोक्तावादी संस्कृति के फैलाव से यह आकर्षण तीव्र से तीव्रतर होता जा रहा है। पर ऐसी स्थिति में याद रखना आवश्यक है कि ये भौतिक पदार्थ सुख तो दे सकते हैं, आनंद नहीं। आनंद का निर्झर तो आत्मसंयम से फूटता है। उसकी मिठास अनिर्वचनीय और अनुपम होती है। इस मिठास के सम्मुख धन-संपत्ति, सत्ता, सौंदर्य का सुख, सागर के खारे पानी जैसा लगने लगता है।

1. प्रकृति ने मानव-जीवन को कैसा बनाया है–

(क) बहुत सरल (ख) बहुत जटिल
(ग) बहुत सुखद (घ) बहुत दुःखद।

2. 'मरु-मरीचिका के मैदान में जल की चाह' का क्या अभिप्राय है–

(क) धूप में छाँव की इच्छा
(ख) रेगिस्तान में जल की इच्छा
(ग) इंद्रिय-विषयों में सुख की इच्छा
(घ) भूख में भोजन की इच्छा।

3. निम्नलिखित कथन (A) तथा कारण (R) को ध्यानपूर्वक पढ़िए। उसके बाद दिए गए विकल्पों में से कोई एक सही विकल्प चुनकर लिखिए–

कथन (A)–प्रकृति ने मानव-जीवन को बहुत जटिल बनाया है।

कारण (R)–मानव उसे सरल बनाता जा रहा है।

(क) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) गलत है।
(ख) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।
(ग) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) उसकी गलत व्याख्या करता है।
(घ) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों गलत हैं।

4. मनुष्य के दुख का मूल कारण है–

(क) अधिक भोजन करना
(ख) अधिक व्रत-उपवास
(ग) भौतिक पदार्थों के प्रति इंद्रियों का आकर्षण
(घ) इंद्रियों को वश में रखना।

5. आत्मसंयम की उपादेयता है–

(क) मन पर अधिकार (ख) शारीरिक सबलता
(ग) मानसिक दुर्बलता (घ) सच्चे आनंद की प्राप्ति।

उत्तर— 1. (क) **2.** (ग) **3.** (घ) **4.** (ग) **5.** (घ)।

(8) फूल बोने का तात्पर्य सुख पहुँचाना तथा काँटे बोने का अर्थ दुःख पहुँचाना है। मानव-जीवन की सार्थकता अपने आपको सुखी बनाने में ही नहीं है, बल्कि औरों को सुख पहुँचाने में है। तुलसीदास ने कहा है कि दूसरों की भलाई से बढ़कर धर्म नहीं तथा दूसरों के अपकार से बढ़कर नीचता नहीं। वह व्यक्ति परम धार्मिक है, जो परोपकारी है। दूसरों को सुख पहुँचाने के लिए ईश्वर को भी धरती पर अवतरित होना पड़ता है। जिन्होंने मनुष्य-जाति की भलाई के लिए अपना सुख तथा अपने प्राण बलिदान कर दिए, वे लोग मानव-जाति के इतिहास में चिरस्मरणीय एवं वंदनीय बन गए। इसीलिए मनीषियों तथा संतों ने सदा परोपकार की दीक्षा दी। कबीर ने तो यहाँ तक कहा है कि जो तेरे लिए काँटे बोता है, उसके लिए भी तू फूल बो। ऐसी स्थिति में हमें चाहिए कि हम प्राणियों के कष्ट-निवारण में तथा उन्हें सुखी बनाने में यथाशक्ति योगदान करें। यह भी ध्यान रखना है कि दूसरों के शोषण के लिए अथवा स्वार्थपूर्ति के लिए किया गया प्रत्येक अनैतिक कार्य वर्जित है।

1. मानव-जीवन की सार्थकता क्या है–

(क) स्वयं को सुखी करना (ख) दूसरों को सुख पहुँचाना
(ग) धन-दौलत कमाना (घ) मौज-मस्ती करना।

2. सबसे बड़ी नीचता क्या है–

(क) दूसरों की भलाई करना
(ख) अपना कार्य सिद्ध कर लेना
(ग) दूसरों का अपकार करना
(घ) केवल अपने लिए ही जीना।

3. मानव-जाति के इतिहास में कौन चिरस्मरणीय होते हैं–

(क) जो नई-नई खोज करते हैं
(ख) जो सदैव विजय प्राप्त करते हैं
(ग) जो वीर और साहसी होते हैं
(घ) जो परोपकार में अपना सुख और प्राण तक बलिदान कर देते हैं।

4. निम्नलिखित कथन (A) तथा कारण (R) को ध्यानपूर्वक पढ़िए। उसके बाद दिए गए विकल्पों में से कोई एक सही विकल्प चुनकर लिखिए–

कथन (A)–मानव जीवन की सार्थकता अपने आपको सुख पहुँचाने में नहीं है।

कारण (R)–मानव जीवन की सार्थकता औरों को सुख पहुँचाने में है।

(क) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों गलत हैं।
(ख) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) गलत है।
(ग) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।
(घ) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं और कारण (R), कथन (A) की सही व्याख्या करता है।

5. 'फूल बोना' का तात्पर्य है–

(क) बगीचा लगाना (ख) सजावट करना
(ग) सुख पहुँचाना (घ) दुःख पहुँचाना।

उत्तर— 1. (ख) **2.** (ग) **3.** (घ) **4.** (घ) **5.** (ग)।

(9) जिस प्रकार शरीर को स्वस्थ रखने के लिए संतुलित आहार की जरूरत है, उसी तरह मानसिक स्वास्थ्य के लिए अच्छी पुस्तकें अनिवार्य हैं। अच्छी पुस्तकें वे हैं, जो मानसिक पोषण दे सकें, बच्चों को सहज-भाव से संस्कारवान् बना सकें। पुस्तकों की विषयवस्तु बच्चों के मानसिक स्तर, आयु, वर्ग, परिवेशगत अनुभवों के अनुकूल हों। बच्चे को समझे बिना उसका पोषण नहीं किया जा सकता। इसी तरह बच्चे के मनोविज्ञान को समझे बिना लेखन नहीं किया जा सकता है। बाल-साहित्य के नाम पर कुछ भी लिखना या व्यवसाय की दृष्टि से छापकर बेच देना कुपोषित अन्न परोसने जैसा है। बच्चों के लिए जो लिखा जाए, यह विचार भी किया जाना चाहिए कि उसका प्रभाव क्या होगा? इस समय इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की धूम है। इसका त्वरित प्रभाव बहुत सारी चिंताजनक विकृतियों को जन्म दे रहा है। बच्चों की सहजता नष्ट होती जा रही है। माता-पिता के पास इतना समय नहीं है कि वह ठंडे मन से कुछ समाधान सोचे। ऐसे कितने अभिभावक या रिश्तेदार हैं, जो जन्मदिन के अवसर पर बच्चों को उपहार में पुस्तकें देते हैं? न के बराबर। बच्चों को उनकी रुचि के अनुकूल अगर किताबें मिलेंगी तो वे ज़रूर पढ़ेंगे।

1. **शरीर को स्वस्थ रखने के लिए क्या ज़रूरी होता है–**
   (क) खुला वातावरण (ख) संतुलित आहार
   (ग) स्वादिष्ट मिठाइयाँ (घ) चाट-पकौड़ी।
2. **निम्नलिखित कथन (A) तथा कारण (R) को ध्यानपूर्वक पढ़िए। उसके बाद दिए गए विकल्पों में से कोई एक सही विकल्प चुनकर लिखिए–**

   कथन (A)–शरीर को स्वस्थ रखने के लिए संतुलित आहार की आवश्यकता है।

   कारण (R)–अच्छी पुस्तकें वे हैं, जो मानसिक पोषण दे सकें।
   (क) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों गलत हैं।
   (ख) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) गलत है।
   (ग) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) उसकी सही व्याख्या नहीं करता है।
   (घ) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं और कारण (R), कथन (A) की सही व्याख्या करता है।
3. **अच्छी पुस्तकें कैसी होती हैं–**
   (क) जो मनोरंजन कर सकें
   (ख) जो आसानी से पढ़ी जा सकें
   (ग) जो कम कीमत में मिल सकें
   (घ) जो मानसिक पोषण दे सकें।
4. **बाल-साहित्य की विषय वस्तु कैसी होनी चाहिए–**
   (क) मानसिक स्तर के अनुकूल
   (ख) आयु और वर्ग के अनुकूल
   (ग) परिवेशगत अनुभवों के अनुकूल
   (घ) उपर्युक्त सभी।
5. **इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का बच्चों पर क्या प्रभाव पड़ रहा है–**
   (क) उनमें बहुत-सी विकृतियाँ उत्पन्न हो रही हैं
   (ख) उनकी सहजता नष्ट होती जा रही है
   (ग) वे कुमार्गगामी बन रहे हैं
   (घ) उपर्युक्त सभी।

उत्तर— **1.** (ख) **2.** (ग) **3.** (घ) **4.** (घ) **5.** (घ)।

(10) जीवन का कोई भी रास्ता सफल अथवा निर्बाध नहीं होता। कामयाबी के हर रास्ते में कई मुश्किलों का आना तय है। हर बड़ी सफलता के पीछे अनेक छोटी-छोटी असफलताएँ छिपी रहती हैं। किसी बड़े पत्थर के टुकड़े करने के लिए हमें उस पर असंख्य प्रहार करने पड़ते हैं। अंत में एक प्रहार ऐसा होता है कि वह पत्थर को दो टुकड़ों में बाँट देता है। लेकिन क्या अंतिम प्रहार से पहले किए गए सारे प्रहार निरर्थक थे? नहीं। ऊपर से बेशक पहले का हर प्रहार निरर्थक लगता हो, लेकिन हर प्रहार पूरी तरह सार्थक था; क्योंकि उन प्रहारों में ही अंतिम प्रहार की सफलता छिपी हुई थी। हर चोट ने निरंतर उस पत्थर को टूटने के अधिकाधिक निकट ला दिया था। वास्तव में थोड़ी-बहुत असफलताओं के बिना सफलता संभव ही नहीं। व्यक्ति अपनी सफलताओं की बजाय असफलताओं से सीखता है। हर असफलता से उसे पुनर्मूल्यांकन का अवसर मिलता है। सफलता के बाद हम कभी अपना पुनर्मूल्यांकन नहीं करते। समस्या आए बगैर हम रास्ता नहीं खोजते। समस्याएँ ही हमें उपाय खोजने के लिए प्रेरित करती हैं, हमें चिंतनशील बनाती हैं, हम में धैर्य का विकास करती हैं। ठोकर खाने के बाद ही हम अपनी असफलता का कारण जानने का प्रयास करते हैं। उसके बाद ही नए सिरे से आगे बढ़ने के लिए अपनी क्षमता का विकास करते हैं। जीवन की हर असफलता किसी बड़ी सफलता का आधार बनती है।

1. **जीवन का कोई भी रास्ता नहीं होता–**
   (क) बाधारहित (ख) बाधायुक्त
   (ग) दुखद (घ) बहुत लंबा।
2. **हर बड़ी सफलता के पीछे क्या छिपा रहता है–**
   (क) धन-दौलत (ख) छोटी-छोटी असफलता
   (ग) एक सुनहरा भविष्य (घ) एक बड़ा इतिहास।
3. **बड़े पत्थर के टुकड़े को तोड़ने में उस पर पड़ने वाले किस प्रहार का अधिक महत्त्व है–**
   (क) पहले प्रहार का (ख) दूसरे प्रहार का
   (ग) प्रत्येक प्रहार का (घ) अंतिम प्रहार का।
4. **व्यक्ति अपनी सफलताओं की अपेक्षा असफलताओं से अधिक क्यों सीखता है–**
   (क) असफलता उसे बलवान बनाती है
   (ख) असफलता उसकी बुद्धि को बढ़ाती है
   (ग) असफलता उसे ज्ञानी बनाती है
   (घ) असफलता उसे पुनर्मूल्यांकन का अवसर देती है।
5. **निम्नलिखित कथन (A) तथा कारण (R) को ध्यानपूर्वक पढ़िए। उसके बाद दिए गए विकल्पों में से कोई एक सही विकल्प चुनकर लिखिए–**

   कथन (A)–जीवन का कोई भी रास्ता सफल अथवा निर्बाध नहीं होता।

   कारण (R)–कामयाबी के हर रास्ते में कई मुश्किलों का आना तय है।
   (क) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों गलत हैं।
   (ख) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।
   (ग) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) गलत है।
   (घ) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं और कारण (R), कथन (A) की सही व्याख्या करता है।

उत्तर— **1.** (क) **2.** (ख) **3.** (ग) **4.** (घ) **5.** (घ)।

(11) आत्मविश्वास सफलता का प्रतीक है। आत्मविश्वासी व्यक्ति सफलता को अपने पुरुषार्थ से उपार्जित न मानकर ईश्वरीय अनुदान मानता है। आत्मविश्वासी मनुष्य सफलता को अपने ही उपयोग में प्रयुक्त नहीं करता, अपितु औरों में भी बाँटता है। जिस किसी तरह से श्रेय, सफलता, यश-सम्मान पाने की प्रवृत्ति उसमें नहीं होती। आत्मविश्वास ऐसी संजीवनी है, जो व्यक्तित्व के तीनों पहलुओं-चिंतन, चरित्र और व्यवहार को प्रभावित करती है। लक्ष्य के प्रति विश्वास भी हमारी विचार-तरंगों को उसी ओर उन्मुख कर देता है। वह लक्ष्य का चयनकर सफलता पाता है। आत्मविश्वास का विकास एवं उपयोग विचारों और मान्यताओं के आधार पर होता है। हम जैसा स्वयं को मानेंगे, वैसा ही बनते चले जाएँगे। कायरता अथवा प्रखरता में से किसका वरण करना है? आत्मविश्वासी इन दोनों में उच्चतम का वरण करता है। वरण ही नहीं करता, अपितु उस पर बढ़ता चला जाता है। उसके पदचिह्न औरों के लिए पाथेय बन जाते हैं? आत्मशक्ति विकसित करने के लिए हमें दूसरों पर निर्भर नहीं रहना चाहिए। संदेह से दूर रहना चाहिए।

1. **सफलता के लिए किसका होना आवश्यक है–**
   (क) शक्ति का (ख) धन का
   (ग) आत्मविश्वास का (घ) साधन का।
2. **आत्मविश्वास को संजीवनी कहा गया है, क्योंकि–**
   (क) यह औषधि का काम करता है
   (ख) यह जीवन को सजाता है
   (ग) यह जीवन को दूभर कर देता है
   (घ) यह हमें नए जीवन की ओर उन्मुख करता है।

3. **हमारा स्वरूप वैसा ही बनता है–**
(क) जैसा हम चाहते हैं
(ख) जैसा हम कार्य करते हैं
(ग) जैसा हम स्वयं को मानते हैं
(घ) जैसा हम भोजन करते हैं।

4. **निम्नलिखित कथन (A) तथा कारण (R) को ध्यानपूर्वक पढ़िए। उसके बाद दिए गए विकल्पों में से कोई एक सही विकल्प चुनकर लिखिए–**

कथन (A)–आत्मविश्वासी मनुष्य सफलता को अपने ही उपयोग में प्रयुक्त नहीं करता।

कारण (R)–वह सफलता को औरों में भी बाँटता है।
(क) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) गलत है।
(ख) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।
(ग) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों गलत हैं।
(घ) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं और कारण (R), कथन (A) की सही व्याख्या करता है।

5. **आत्मशक्ति विकसित करने के लिए हमें क्या करना चाहिए–**
(क) नित्य व्यायाम करना चाहिए
(ख) पौष्टिक भोजन करना चाहिए
(ग) संदेह से दूर रहना चाहिए
(घ) स्वाध्याय करना चाहिए।

उत्तर— 1. (ग) **2.** (घ) **3.** (ग) **4.** (घ) **5.** (ग)।

(12) कभी-कभी सहज से तेज गति में परिवर्तित होते क्रोध को समय रहते नियंत्रित नहीं किया गया तो उसके परिणाम अत्यंत घातक और पश्चात्ताप के भाव जगाने वाले हो सकते हैं। कैलिफोर्निया स्टेट यूनिवर्सिटी के मनोविश्लेषक टॉम जी० स्टीवेन्स ने अपनी किताब 'ओवरकम एंगर ऐंड एग्रेसन' में स्पष्ट किया है कि क्रोध-नियंत्रण का एक प्रमुख तरीका यह है कि स्थिति को अपने नहीं, दूसरों के नजरिए से देखें। दूसरों को उन स्थितियों पर प्रकाश डालने के लिए प्रोत्साहित करें, क्षमा करना सीखें, बीते को बिसारने की आदत विकसित करें और किसी को चोट पहुँचाने के बजाय प्रशंसा से उसका मूल्यांकन करें। याद रखें, क्रोध-नियंत्रण से आप स्वयं को शक्तिशाली बनाते हैं। इससे आपकी खुशहाली और स्मृतियों का विस्तार होता है। यूनिवर्सिटी ऑफ सिनसिनाटी के वैज्ञानिकों ने अपनी किताब 50 साइंस ऑफ मेंटल इलनेस में इन कमजोरियों पर प्रकाश डालते हुए गुस्से को काबू में रखने के कारगर सूत्र दिए हैं। क्रोध-नियंत्रण से हम अपना ही नहीं, दूसरों के उजड़ते संसार को फिर से आबाद कर सकते हैं क्योंकि शांत मन सृजन में समर्थ होता है। हमारे सृजनात्मक होने से ही मानवता का हित सध सकता है। तो जब भी क्रोध आए, इन उपायों को आजमाएँ। जीवन में बिखरी हुई चीजों को सँवारने की ओर कदम खुद बढ़ चलेंगे।

(CBSE 2023)

1. **क्रोध-नियंत्रण से होने वाले लाभों के संबंध में अनुपयुक्त कथन है–**
(क) इससे व्यक्ति स्वयं को शक्तिशाली बनाता है
(ख) इससे व्यक्ति के जीवन में खुशहाली आती है
(ग) इससे व्यक्ति की विस्मृतियों का विस्तार होता है
(घ) इससे व्यक्ति की रचनात्मकता में वृद्धि होती है।

2. **किस तरह का क्रोध अंततः पश्चात्ताप का कारण बनता है–**
(क) अत्यंत आवेग में किया गया क्रोध
(ख) सहजभाव से किया गया क्रोध
(ग) प्रायश्चित्त भाव से किया गया क्रोध
(घ) आत्मघात भाव से किया गया क्रोध।

3. **मनोविश्लेषक स्टीवेन्स के अनुसार क्रोध पर काबू पाने पर सर्वोपयुक्त उपाय है–**
(क) परिस्थितियों पर दूसरों के नियंत्रण को स्वीकार करना
(ख) परिस्थितियों पर पूरी तरह नियंत्रण स्थापित करना
(ग) परिस्थितियों को अपने नजरिए से और अच्छे से समझना
(घ) परिस्थितियों को दूसरों के नजरिए से जानने का प्रयास करना।

4. **क्रोध आने पर क्या करना चाहिए–**
(क) उसकी असहज अभिव्यक्ति
(ख) उसकी सहज अभिव्यक्ति
(ग) संयमित रहने का प्रयत्न
(घ) घातक परिणाम का स्मरण।

5. **निम्नलिखित कथन (A) तथा कारण (R) को ध्यानपूर्वक पढ़िए। उसके बाद दिए गए विकल्पों में से कोई एक सही विकल्प चुनकर लिखिए–**

कथन (A)–क्रोध नवसृजन का संहारक है।

कारण (R)–क्रोध अवस्था में क्षमाशीलता न्यून हो जाती है।
(क) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों गलत हैं।
(ख) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) गलत है।
(ग) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) उसकी सही व्याख्या करता है।
(घ) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) उसकी सही व्याख्या नहीं है।

उत्तर— 1. (घ) **2.** (क) **3.** (घ) **4.** (ग) **5.** (घ)।

(13) शोर से होने वाली बहरेपन की बीमारी एक गंभीर स्वास्थ्यगत समस्या है। तेज आवाज हमारी श्रवण कोशिकाओं पर बहुत दबाव डालती है, जिससे वे स्थायी रूप से चोटिल हो सकती हैं। यदि सुनने की क्षमता एकबार चली गई तो पुनः पाना नामुमकिन है। विश्व स्वास्थ्य संगठन की 'वर्ल्ड हीयरिंग रिपोर्ट' के मुताबित विश्व की 1.5 अरब आबादी बहरेपन के साथ जी रही है। ध्वनि प्रदूषण दरअसल ऐसे अवांछित विद्युत चुंबकीय संकेत है, जो इंसान को कई रूपों में नुकसान पहुँचाते हैं। इसीलिए, शोर-प्रेरित बहरेपन पर फौरन ध्यान देने की जरूरत है। वैश्विक अध्ययन बताते हैं कि निर्माण कार्य, औद्योगिक कामकाज, जहाज बनाने या मरम्मत करने संबंधी काम, अग्निशमन, नागरिक उड्डयन आदि सेवाओं में लगे श्रमिकों में शोर-प्रेरित बहरेपन का खतरा अधिक होता है। आकलन है कि 15 फीसदी नौजवान संगीत-कार्यक्रमों, खेल-आयोजनों और दैनिक कामकाज में होने वाले शोर से बहरेपन का शिकार होते हैं। शोर-प्रेरित बहरेपन की समस्या विकासशील देशों में ज्यादा है, जहाँ तीव्र औद्योगीकरण, अनौपचारिक क्षेत्र के विस्तार और सुरक्षात्मक व शोर-नियंत्रणरोधी उपायों की कमी से लोग चौतरफा शोर-शराबे में दिन बिताने को अभिशप्त हैं। हमें यह समझना ही होगा कि श्रवण-शक्ति का ह्रास न सिर्फ इंसान को प्रभावित करता है, बल्कि समाज पर भी नकारात्मक असर डालता है। ***(CBSE 2023)***

1. **शोर-प्रेरित बहरेपन का खतरा किस क्षेत्र से जुड़े लोगों को कम है–**
(क) जहाज-निर्माण से जुड़े लोगों को
(ख) स्वास्थ्य-सेवाओं से जुड़े लोगों को
(ग) खेल-आयोजनों से जुड़े लोगों को
(घ) संगीत-कार्यक्रमों से जुड़े लोगों को।

2. **गद्यांश के संदर्भ में अनुपयुक्त कथन है–**
   (क) विकासशील देशों में अनौपचारिक क्षेत्र विस्तार की समस्या नहीं है
   (ख) विकासशील देशों में शोर-नियंत्रणरोधी उपायों पर अधिक ध्यान नहीं दिया जाता है
   (ग) कुछ सेवाओं से जुड़े लोग अन्य की तुलना में बहरेपन के अधिक शिकार हैं
   (घ) कुछ खास सेवाओं से जुड़े युवा भी आज बहरेपन का शिकार हो रहे हैं।
3. **विकासशील देशों के लोगों के जीवन को अभिशप्त क्यों कहा गया है–**
   (क) उनका जीवन अनेक सामाजिक संकटों से घिरा है
   (ख) उनका जीवन अनेक आर्थिक संकटों से घिरा है
   (ग) वे खराब सेहत वाली विवश जिंदगी बसर करते हैं
   (घ) वे शोर-शराबे से भरी जिंदगी जीने को विवश हैं।
4. **तीव्र आवाज़ का हमारे शरीर पर क्या प्रभाव पड़ता है–**
   (क) तंत्रिका-कोशिकाएँ क्षतिग्रस्त
   (ख) श्रवण-कोशिकाएँ क्षतिग्रस्त
   (ग) रक्त-कोशिकाएँ क्षतिग्रस्त
   (घ) हृदय-कोशिकाएँ क्षतिग्रस्त।
5. **निम्नलिखित कथन (A) तथा कारण (R) को ध्यानपूर्वक पढ़िए। उसके बाद दिए गए विकल्पों में से कोई एक सही विकल्प चुनकर लिखिए–**

   कथन (A)–वर्तमान में श्रवण शक्ति का ह्रास एक सार्वजनिक समस्या बन गई है।

   कारण (R)–आर्थिक विकास की अनियमित होड़ इस समस्या के मूल कारणों में से एक है।
   (क) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों गलत हैं।
   (ख) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) गलत है।
   (ग) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या करता है।
   (घ) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) कथन (A) की गलत व्याख्या करता है।

उत्तर— **1.** (ख) **2.** (क) **3.** (घ) **4.** (ख) **5.** (घ)।

(14) जलवायु परिवर्तन के दौर में गरमी का बढ़ता प्रकोप अनेक चिंताएँ उत्पन्न कर रहा है। भूमि के सभी क्षेत्र गरमी के प्रकोप से समान रूप से प्रभावित नहीं होते हैं। जहाँ अधिक हरियाली है, पेड़ हैं, वहाँ गरमी की मार अपेक्षाकृत कम है, जहाँ पूरा क्षेत्र सीमेंट-कंक्रीट के निर्माणों और सड़कों से भरा पड़ा है, वहाँ गरमी अधिक होती है। प्रायः किसी भी शहर के लिए एक ही तापमान बताया जाता है, पर वास्तव में एक ही शहर के विभिन्न क्षेत्रों के तापमान में बहुत अंतर होता है। 10 डिग्री सेल्सियस या उससे भी अधिक का अंतर एक ही महानगर या बड़े शहर के भीतर देखा जा सकता है। वृद्ध और पहले से कमज़ोर स्वास्थ्य के लोगों पर चरम गरमी के दिनों में विशेष ध्यान देने की जरूरत है। गरमी के प्रकोप से उन लोगों की स्थिति और बिगड़ सकती है, जो पहले से साँस व हृदय संबंधी समस्याओं से त्रस्त हैं।

पर्यावरणविदों के अनुसार, शहरों में अधिक तापमान के कुछ प्रमुख कारण इस प्रकार हैं। आधुनिक शहरों का आकार-प्रकार वायु के बहाव के हिसाब से ठीक नहीं है। गाँव में हवा रुकती नहीं है, लेकिन शहरों में ऊँची इमारतों की वजह से हवा रुकती है और बेचैनी बढ़ती है। शहर रेगिस्तान की तरह होने लगे हैं। कई जगहों पर किसी वनस्पति का नमोनिशान नहीं होता है, ऐसे इलाकों पर बारिश भी बेअसर होती है। वाष्पीकरण कम होता है और गरमी बढ़ जाती है। शहरों में मानव-जनित ऊष्मा भी बहुत बढ़ गई है। पेट्रोलियम पदार्थों के अधिकतम उपयोग से भी शहरी तापमान बढ़ रहा है। गरमी के प्रकोप को कम करने के लिए बसावट सुधारने से हरियाली बढ़ाने तक बहुत काम हैं, जो हमें करने चाहिए। स्थानीय प्रजाति के वृक्षों की संख्या बढ़ाने तथा परंपरागत जलस्रोतों की रक्षा पर ध्यान देना चाहिए।

1. **शहरी क्षेत्रों में अधिक तापमान का क्या कारण है–**
   (क) शहरों में बहुमंजिला इमारतों का होना
   (ख) शहरों में पक्की सड़कों का जाल होना
   (ग) शहरों में हरियाली का असमान रूप में पाया जाना
   (घ) शहरों में सीमेंट-कंक्रीट के निर्माण का अधिक होना।
2. **शहरी क्षेत्रों में असमान तापमान का क्या कारण है–**
   (क) हरियाली की तुलना में सीमेंट-कंक्रीट का अधिक होना
   (ख) हरियाली की तुलना में सीमेंट-कंक्रीट के निर्माण का अधिक होना
   (ग) शहरों में हरियाली का असमान अनुपात
   (घ) शहरों में हरियाली का कम होना।
3. **गरमी के प्रकोप से किन लोगों पर विशेष ध्यान देने की ज़रूरत है–**
   (क) कमज़ोर लोगों पर
   (ख) वृद्ध लोगों पर
   (ग) वृद्ध व कमज़ोर स्वास्थ्य के लोगों पर।
   (घ) साँस व हृदय संबंधी समस्याओं से ग्रसित लोगों पर
4. **परंपरागत जलस्रोतों का उचित विकल्प है–**
   (क) कुआँ, पोखर, नलकूप
   (ख) कुआँ, हैंडपंप, पोखर
   (ग) कुआँ, तालाब, नलकूप
   (घ) कुआँ, तालाब, बावड़ी।
5. **निम्नलिखित कथन (A) तथा कारण (R) को ध्यानपूर्वक पढ़िए। उसके बाद दिए गए विकल्पों में से कोई एक सही विकल्प चुनकर लिखिए–**

   कथन (A)–गाँव में हवा रुकती नहीं है, लेकिन शहरों में हवा रुकती है।

   कारण (R)–आधुनिक शहरों का आकार-प्रकार वायु के बहाव के हिसाब से ठीक नहीं है।
   (क) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों गलत हैं।
   (ख) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।
   (ग) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) कथन (A) की गलत व्याख्या करता है।
   (घ) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण (R), कथन (A) की सही व्याख्या करता है।

उत्तर— **1.** (क) **2.** (ग) **3.** (ग) **4.** (घ) **5.** (घ)।

(15) पृथ्वी पर लगातार खतरे मँडराते रहते हैं। हर साल हज़ारों की संख्या में उल्का पिंड पृथ्वी की ओर आते हैं। और इनसे कभी-कभी वैज्ञानिकों को भी खतरा महसूस होने लगता है। उल्का से पैदा खतरे से निबटने के लिए वैज्ञानिक तरीके भी खोजते रहे हैं। नासा की सोच रही है कि क्या परमाणु हथियारों के दम पर किसी खतरनाक उल्का पिंड को पृथ्वी से टकराने से पहले ही नष्ट किया जा सकता है? क्या उल्का पिंड की दिशा को रॉकेट बूस्टर इत्यादि से मोड़ा जा सकता है? अभी इन दोनों ही उपायों पर ज़्यादा काम नहीं हुआ है। लेकिन वैज्ञानिकों को

यह भी लगता है कि कभी कोई ज्यादा ही खतरनाक उल्का पिंड पृथ्वी से टकराया तो क्या होगा? पृथ्वी के इंसान अगर खत्म हो गए तो क्या होगा? एक समाधान एक अमेरिकी उद्यमी की ओर से आया है, जो काफी रोचक है। बेन हल्डमैन नामक उद्यमी 'लाइफशिप' नामक एक स्टार्टअप के संस्थापक हैं, जिनका सिर्फ एक ही अभियान है–
मानव बीज बैंक बनाना। दूसरे शब्दों में कहें तो इस बैंक में मानव डीएनए को संरक्षित किया जाएगा। यह बैंक चाँद पर स्थापित होगा। अगर इस धरती पर इंसान खत्म हो गए, तो मानव सभ्यता को फिर शुरू करने में यह बैंक सहायक होगा। ***(CBSE 2023)***

1. **मानव बीज बैंक में किसे संरक्षित किए जाने की योजना है–**
   (क) मानव डीएनए को
   (ख) मानव कोशिका को
   (ग) मानव रक्त को
   (घ) मानव सभ्यता को।
2. **बेन हल्डमैन की भविष्य में इंसानों को बचाने के क्षेत्र में किए जाने वाले प्रयास को क्या कहा जा सकता है–**
   (क) रोचक और विचारणीय
   (ख) अरोचक और विचारणीय
   (ग) रोचक और अविचारणीय
   (घ) अरोचक और अविचारणीय।
3. **निम्नलिखित कथन (A) तथा कारण (R) को ध्यानपूर्वक पढ़िए। उसके बाद दिए गए विकल्पों में से कोई एक सही विकल्प चुनकर लिखिए–**

   कथन (A)–प्रत्येक वर्ष हज़ारों की संख्या में पृथ्वी की ओर आते उल्का पिंडों को वैज्ञानिक खतरा मानते हैं।

   कारण (R)–पृथ्वी की ओर आने वाले उल्का पिंडों को परमाण्विक हथियारों से सफलतापूर्वक पूरी तरह नष्ट किया जा सकता है।
   (क) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों गलत हैं।
   (ख) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) गलत है।
   (ग) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।
   (घ) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं और कारण (R), कथन (A) की सही व्याख्या करता है।
4. **मावन बीज बैंक को कहाँ स्थापित किए जाने की योजना है–**
   (क) नासा में (ख) पृथ्वी पर
   (ग) मंगल पर (घ) चाँद पर
5. **गद्यांश के आधार पर वैज्ञानिकों के चिंतन का कारण इनमें से क्या नहीं है–**
   (क) उल्का पिंड का पृथ्वी से टकराना
   (ख) पृथ्वी के इंसान विहीन हो जाने की स्थिति
   (ग) उल्का पिंड को पृथ्वी से टकराने से पहले नष्ट करना
   (घ) परमाणु हथियार के प्रयोग से होने वाले दुष्प्रभाव रोकना।

उत्तर— **1.** (क) **2.** (क) **3.** (ख) **4.** (घ) **5.** (घ)।

(16) आदमी की पहचान उसकी भाषा से होती है और भाषा संस्कार से बनती है। जिसके जैसे संस्कार होंगे, वैसी उसकी भाषा होगी। जब कोई आदमी भाषा बोलता है, तो साथ में उसके संस्कार भी बोलते हैं। यही कारण है कि भाषा शिक्षक का दायित्व बहुत गुरुतर और चुनौतीपूर्ण है। परंपरागत रूप में शिक्षक की भूमिका इन तीन कौशलों–बोलना, पढ़ना और लिखना तक सीमित कर दी गई है। केवल यांत्रिक कौशल किसी जीती-जागती भाषा का उदाहरण नहीं हो सकते हैं। सोचना और महसूस करना दो ऐसे कारक हैं, जिनमें भाषा सही आकार पाती है। इनके बिना भाषा, भाषा नहीं है, इनके बिना भाषा संस्कार नहीं बन सकती, इसके बिना भाषा युगों-युगों का लंबा सफ़र तय नहीं कर सकती, इनके बिना कोई भाषा किसी देश या समाज की धड़कन नहीं बन सकती। केवल संप्रेषण ही भाषा नहीं हैं। दर्द और मुस्कान के बिना कोई भाषा जीवंत नहीं हो सकती।
भाषा हमारे समाज के निर्माण, विकास, अस्मिता, सामाजिक व सांस्कृतिक पहचान का भी महत्त्वपूर्ण साधन है। भाषा के बिना मनुष्य पूर्ण नहीं है। भाषा में ही हमारे भाव राज्य, संस्कार, प्रांतीयता झलकती है। इस झलक का संबंध व्यक्ति की मानवीय संवेदना और मानसिकता से भी होता है। जिस व्यक्ति के जीवन का उद्देश्य और मानसिकता जिस स्तर की होगी, उसकी भाषा के शब्द और मुख्यार्थ भी उसी स्तर के होंगे। साहित्यकार ऐसी भाषा को आधार बनाते हैं, जो उनके पाठकों एवं श्रोताओं की संवेदना के साथ एकाकार करने में समर्थ हों। ***(CBSE SQP 2023-24)***

1. **आदमी की पहचान उसकी भाषा से होती है, क्योंकि–**
   (क) मनुष्य की पूर्णता भाषा द्वारा ही संभव है
   (ख) व्यक्ति के मनोभाव भाषा से ही व्यक्त होते हैं
   (ग) भाषा का प्रचार और विकास कोई रोक नहीं सकता
   (घ) दर्द और मुस्कान के बिना भाषा जीवित नहीं हो सकती।
2. **निम्नलिखित कथन (A) तथा कारण (R) को ध्यानपूर्वक पढ़िए। उसके बाद दिए गए विकल्पों में से कोई एक सही विकल्प चुनकर लिखिए–**

   कथन (A)–जब कोई आदमी बोलता है, तो साथ में उसके संस्कार भी बोलते हैं।

   कारण (R)–भाषा शिक्षक का दायित्व बहुत चुनौतीपूर्ण होता है, क्योंकि उसे कौशलों का विकास करना होता है।
   (क) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों गलत हैं।
   (ख) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।
   (ग) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) उसकी गलत व्याख्या करता है।
   (घ) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं और कारण (R), कथन (A) की सही व्याख्या करता है।
3. **गद्यांश में साहित्यकार द्वारा किए गए कार्य का उल्लेख इनमें से कौन-से विकल्प से ज्ञात होता है–**
   (क) साहित्य समाज का दर्पण है
   (ख) साहित्यकार साहित्य सृजन में व्यस्त रहता है
   (ग) साहित्यकार सामाजिक व सांस्कृतिक पहचान बनाता है
   (घ) साहित्यकार जन सामान्य की अस्मिता का परिचायक होता है।
4. **'दर्द और मुस्कान के बिना भाषा जीवंत नहीं हो सकती।' लेखक के द्वारा ऐसा कथन दर्शाता है–**
   (क) यथार्थ की समझ
   (ख) सामाजिक समरसता
   (ग) साहित्य-प्रेम
   (घ) भाषा कौशल।
5. **भाषा तब सही आकार पाती है, जब–**
   (क) मनुष्य निरंतर उसका अभ्यास करता रहता है
   (ख) भाषा को सरकारी समर्थन भी प्राप्त होता है
   (ग) भाषा सामाजिक संस्थाओं से प्रोत्साहन प्राप्त करती है
   (घ) भाषायी कौशलों के साथ मनुष्य सोचता और महसूस भी करता है।

उत्तर— **1.** (ख) **2.** (ग) **3.** (घ) **4.** (क) **5.** (घ)।

(17) साहित्य को समाज का प्रतिबिंब माना गया है अर्थात् समाज का पूर्णरूप साहित्य में प्रतिबिंबित होता रहता है। अनादि काल से साहित्य अपने इसी धर्म का पूर्ण निर्वाह करता चला आ रहा है। वह समाज के विभिन्न रूपों का चित्रण कर एक ओर तो हमारे सामने समाज का यथार्थ चित्र प्रस्तुत करता है और दूसरी ओर अपनी प्रखर मेधा और स्वस्थ कल्पना द्वारा समाज के विभिन्न पहलुओं का विवेचन करता हुआ यह भी बताता है कि मानव समाज की सुख-समृद्धि, सुरक्षा और विकास के लिए कौन-सा मार्ग उपादेय है? एक आलोचक के शब्दों में–"कवि वास्तव में समाज की व्यवस्था, वातावरण, धर्म-कर्म, रीति-नीति तथा सामाजिक शिष्टाचार या लोक व्यवहार से ही अपने काव्य के उपकरण चुनता है और उनका प्रतिपादन अपने आदर्शों के अनुरूप करता है।"

साहित्यकार उसी समाज का प्रतिनिधित्व करता है, जिसमें वह जन्म लेता है। वह अपनी समस्याओं का सुलझाव, अपने आदर्श की स्थापना अपने समाज के आदर्शों के अनुरूप ही करता है। जिस सामाजिक वातावरण में उसका जन्म होता है, उसी में उसका शारीरिक, बौद्धिक और मानसिक विकास भी होता है। अतः यह कहना सर्वथा असंभव और अविवेकपूर्ण है कि साहित्यकार समाज से पूर्णतः निरपेक्ष या तटस्थ रह कर साहित्य सृजन करता है। वाल्मीकि, तुलसी, सूर, भारतेंदु, प्रेमचंद आदि का साहित्य इस बात का सर्वाधिक सशक्त प्रमाण है कि साहित्यकार समाज से घनिष्ठ रूप से संबंध रखता हुआ ही साहित्य सृजन करता है। समाज की अवहेलना करने वाला साहित्य क्षणजीवी होता है। ***(CBSE SQP 2023-24)***

1. **साहित्य समाज का प्रतिबिंब है, क्योंकि यह–**
   (क) समाज की वास्तविकता का द्योतक है
   (ख) समाज में लोक व्यवहार का समर्थक है
   (ग) व्यक्ति की समस्याओं का निदान करता है
   (घ) साहित्य को दिशा प्रदान करता है।
2. **गद्यांश दर्शाता है–**
   (क) समाज एवं साहित्य का पारस्परिक संबंध
   (ख) समाज एवं साहित्य की अवहेलना
   (ग) साहित्यकार की सृजन शक्ति
   (घ) सामाजिक शिष्टाचार एवं लोक व्यवहार।
3. **साहित्य की क्षणभंगुरता का कारण होगा–**
   (क) सामाजिक अवज्ञा (ख) सामाजिक समस्या
   (ग) सामाजिक सद्भाव (घ) सामाजिक समरसता।
4. **वाल्मीकि, तुलसी, सूर के उदाहरण द्वारा लेखक चाहता है–**
   (क) भाव साम्यता (ख) प्रत्यक्ष प्रमाण
   (ग) सहानुभूति (घ) शिष्टाचार।
5. **निम्नलिखित कथन (A) तथा कारण (R) को ध्यानपूर्वक पढ़िए। उसके बाद दिए गए विकल्पों में से कोई एक सही विकल्प चुनकर लिखिए–**

   कथन (A)–कवि अपने काव्य के उपकरणों का प्रतिपादन अपने आदर्शों के अनुरूप करता है।

   कारण (R)–कवि हृदय अत्यधिक संवेदनशील होता है एवं सदैव देशहित चाहता है।
   (क) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों गलत हैं।
   (ख) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।
   (ग) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) उसकी गलत व्याख्या करता है।
   (घ) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं और कारण (R), कथन (A) की सही व्याख्या करता है।

उत्तर— **1.** (क) **2.** (क) **3.** (क) **4.** (ख) **5.** (ग)।

(18) आज से कुछेक दशक पहले यदि कोई हमसे यह प्रश्न करता कि क्या रोबोट्स अच्छे अध्यापक साबित होंगे तो निश्चित रूप से हमें प्रश्न करने वाले की बुद्धि पर तरस आता, लेकिन आज के इस वैज्ञानिक युग में यह प्रश्न हमें कुछ सोचने को बाध्य करता है। मेरी दृष्टि में इसका उत्तर होगा–नहीं, ऐसा इसलिए कि शिक्षण का काम सिर्फ़ शारीरिक ही नहीं, बल्कि मानसिक भी है और उसके साथ-साथ मनोवैज्ञानिक भी।

रोबोट एक मशीन है, जो मनुष्य के संकेत व निर्देश का अनुपालन करने में समर्थ है, उसमें भावनाओं का आरोह व अवरोह संभव नहीं है, जबकि एक शिक्षक में भावनाओं का होना आवश्यक ही नहीं, अनिवार्य भी है। आज से नहीं, अपितु पुरातनकाल से ही हमारे देश में गुरु-शिष्य की लंबी परंपरा रही है। क्या रोबोट के साथ यह परंपरा कायम रहेगी? गुरु और शिष्य का संबंध भावनात्मक धरातल पर अवस्थित होता है, गुरु के प्रति शिष्य के स्नेह में श्रद्धा व आदर का भाव होता है, लेकिन मशीनी मानव के प्रति शिष्य के हृदय में आदर और श्रद्धा के भाव नहीं पनप सकते, तब यह रोबोट द्वारा अध्यापन किए जाने पर अपने आपको संतुष्ट नहीं कर सकता।

एक सरल अध्यापन के दौरान मनोवैज्ञानिक पद्धति का सहारा लेना होता है, लेकिन क्या रोबोट द्वारा अध्यापन में मनोवैज्ञानिक पद्धति का सहारा लेना संभव है? वर्ग के वातावरण व छात्रों के मूड के अनुरूप शिक्षक अपनी पूर्व निर्धारित अध्यापन-पद्धति में बदलाव करते हैं, क्या रोबोट ऐसा कर सकता है? ***(CBSE 2015)***

1. **कुछेक दशक पहले रोबोट्स के बारे में क्या धारणा थी–**
   (क) वे अच्छे अध्यापक साबित होंगे
   (ख) वे अच्छे सैनिक सिद्ध होंगे
   (ग) वे अच्छे सेवक सिद्ध होंगे
   (घ) वे अच्छे वैज्ञानिक सिद्ध होंगे।
2. **शिक्षण किस प्रकार का कार्य है–**
   (क) शारीरिक (ख) मानसिक
   (ग) मनोवैज्ञानिक (घ) ये सभी।
3. **निम्नलिखित कथन (A) तथा कारण (R) को ध्यानपूर्वक पढ़िए। उसके बाद दिए गए विकल्पों में से कोई एक सही विकल्प चुनकर लिखिए–**

   कथन (A)–रोबोट एक मशीन है, जो मनुष्य के संकेतों व निर्देशों का पालन करने में समर्थ है।

   कारण (R)–उसमें भावनाओं का आरोह-अवरोह संभव नहीं है।
   (क) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों गलत हैं।
   (ख) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।
   (ग) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं और कारण (R), कथन (A) की सही व्याख्या करता है।
   (घ) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) उसकी गलत व्याख्या करता है।
4. **रोबोट में क्या संभव नहीं है–**
   (क) भावनाओं का आरोह-अवरोह
   (ख) अच्छे सेवक के गुणों का विकास
   (ग) मानवीय कर्मठता का उद्भव
   (घ) आज्ञाकारी शिष्य के गुण।
5. **पुरातनकाल से हमारे देश में कौन-सी परंपरा रही है–**
   (क) एकल परिवार की (ख) शिक्षा के व्यवसाय की
   (ग) गुरु-शिष्य की (घ) राजा-रंक की।

उत्तर— **1.** (क) **2.** (घ) **3.** (ग) **4.** (क) **5.** (ग)।

(19) चरित्र का मूल भी भावों के विशेष प्रकार के संगठन में ही समझना चाहिए। लोकरक्षा और लोकरंजन की सारी व्यवस्था का ढाँचा इन्हीं पर ठहराया गया है। धर्म-शासन, राज-शासन, मत-शासन सबमें इनसे पूरा काम लिया गया है। इनका सदुपयोग भी हुआ है और दुरुपयोग भी। जिस प्रकार लोक-कल्याण के व्यापक उद्देश्य की सिद्धि के लिए मनुष्य के मनोविकार काम में लाए गए हैं, उसी प्रकार संप्रदाय या संस्था के संकुचित और परिमित विधान की सफलता के लिए भी। सब प्रकार के शासन में चाहे धर्म-शासन हो, चाहे राज-शासन, मनुष्य-जाति से भय और लोभ से पूरा काम लिया गया है। दंड का भय और अनुग्रह का लोभ दिखाते हुए राज-शासन तथा नरक का भय और स्वर्ग का लोभ दिखाते हुए धर्म-शासन और मत-शासन चलते आ रहे हैं। इसके द्वारा भय और लोभ का प्रवर्तन सीमा के बाहर भी प्रायः हुआ है और होता रहता है। जिस प्रकार शासक-वर्ग अपनी रक्षा और स्वार्थसिद्धि के लिए भी इनसे काम लेते आए हैं, उसी प्रकार धर्म-प्रवर्तक और आचार्य अपने स्वरूप-वैचित्र्य की रक्षा और अपने प्रभाव की प्रतिष्ठा के लिए भी। शासक-वर्ग अपने अन्याय और अत्याचार के विरोध की शांति के लिए भी डराते और ललचाते आए हैं। मत-प्रवर्तक अपने द्वेष और संकुचित विचारों के प्रचार के लिए भी कँपाते और डराते आए हैं। एक जाति को मूर्ति-पूजा करते देख दूसरी जाति के मत-प्रवर्तकों ने उसे पापों में गिना है। एक संप्रदाय को भस्म और रुद्राक्ष धारण करते देख दूसरे संप्रदाय के प्रचारकों ने उनके दर्शन तक को पाप माना है। *(CBSE 2015)*

1. लोकरंजन की व्यवस्था का ढाँचा किस पर आधारित है–
(क) परंपराओं पर
(ख) नियम-कानूनों पर
(ग) धर्मशास्त्रों पर
(घ) भावों के विशेष प्रकार के संगठन पर।

2. मनोभावों का उपयोग किस-किस के द्वारा किया गया–
(क) धर्म-शासन द्वारा (ख) राज-शासन द्वारा
(ग) मत-शासन द्वारा (घ) ये सभी।

3. शासक वर्ग मनोविकारों का उपयोग किसलिए करते आए हैं–
(क) अपनी रक्षा और स्वार्थसिद्धि के लिए
(ख) प्रजा के कल्याण के लिए
(ग) धर्म प्रचार के लिए
(घ) अपने स्वरूप वैचित्र्य की रक्षा के लिए।

4. निम्नलिखित कथन (A) तथा कारण (R) को ध्यानपूर्वक पढ़िए। उसके बाद दिए गए विकल्पों में से कोई एक सही विकल्प चुनकर लिखिए–

कथन (A)–चरित्र का मूल भी भावों के विशेष प्रकार के संगठन में ही समझना चाहिए।

कारण (R)–इसका सदुपयोग भी हुआ है और दुरुपयोग भी।
(क) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों गलत हैं।
(ख) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) गलत है।
(ग) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) उसकी गलत व्याख्या करता है।
(घ) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं और कारण (R), कथन (A) की सही व्याख्या करता है।

5. एक जाति को मूर्ति-पूजा करते देख दूसरी जाति के मत-प्रवर्तकों ने उसे क्या कहा–
(क) पुण्य (ख) पाप
(ग) पाखंड (घ) धर्म।

उत्तर— **1.** (घ) **2.** (घ) **3.** (क) **4.** (ग) **5.** (ख)।

(20) विद्यार्थियों में बढ़ती अनुशासनहीनता के कारणों में संभवतः सर्वाधिक मुख्य कारण यह भी है कि प्रायः विद्यार्थी अनुशासन के लाभों से अपरिचित होते हैं। उन्हें ज्ञान नहीं होता कि अनुशासन से जीवन सुखी एवं शांत बन जाता है। अनुशासनहीनता का दूसरा कारण यह है कि आज की शिक्षा-प्रणाली में आचरण को केवल व्यक्तिगत विषय समझ लिया गया है। विद्यार्थियों को आचरण-संबंधी शिक्षा नहीं दी जाती है तथा पुस्तकीय ज्ञान को ही सबकुछ मान लिया जाता है। फलतः विद्यार्थियों की चंचल मानसिक प्रवृत्ति निरंतर उद्दंडता की ओर उन्मुख होती चली जा रही है; अतः यह आवश्यक है कि हम अपनी शिक्षा-पद्धति में सुधार करें तथा आचारशास्त्र को ही आरंभिक कक्षाओं में अनिवार्य तथा उच्चकक्षाओं में वैकल्पिक विषय के रूप में स्थान दें। इसके साथ ही हमें विद्यार्थियों को यह बताना चाहिए कि अनुशासन किस प्रकार से उनके भावी जीवन के विकास में सहायक बन सकता है। हमें विद्यार्थियों को इस बात की शिक्षा देनी चाहिए कि अनुशासन के माध्यम से मन पर नियंत्रण करने की कला भी आती है। मन को अपने वश में रखने की कला सीख लेने से यह लाभ होता है कि जीवन में प्रगति के पथ पर बढ़ते समय कोई रुकावट नहीं आती, लेकिन जो व्यक्ति अपने मन पर शासन करने की कला में प्रवीण नहीं हो पाते, उन्हें सदैव परमुखापेक्षी रहना पड़ता है। *(CBSE 2016)*

1. विद्यार्थियों में बढ़ती अनुशासनहीनता का मुख्य कारण है–
(क) खेल में अत्यधिक रुचि होना
(ख) अनुशासन के लाभों से परिचित न होना
(ग) मन का अत्यधिक चंचल होना
(घ) परिपक्वता का अभाव।

2. विद्यार्थियों को अनुशासन के लाभों से परिचित कराना आवश्यक है, क्योंकि–
(क) इससे उनका जीवन सुखी एवं शांत बनता है
(ख) वे पढ़ाई में रुचि लेने लगते हैं
(ग) इससे उन्हें अनुशासन का महत्त्व ज्ञात होता है
(घ) वे आदर्श विद्यार्थी बन जाते हैं।

3. निम्नलिखित कथन (A) तथा कारण (R) को ध्यानपूर्वक पढ़िए। उसके बाद दिए गए विकल्पों में से कोई एक सही विकल्प चुनकर लिखिए–

कथन (A)–विद्यार्थियों को आचरण-संबंधी शिक्षा नहीं दी जाती है।

कारण (R)–विद्यार्थियों की चंचल मानसिक प्रवृत्ति निरंतर उद्दंडता की ओर उन्मुख हो रही है।
(क) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों गलत हैं।
(ख) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।
(ग) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) गलत है।
(घ) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं और कारण (R), कथन (A) की सही व्याख्या करता है।

4. मन को वश में रखने की कला सीखने का क्या लाभ है–
(क) जीवन में प्रगति-पथ निर्बाध हो जाता है
(ख) कार्य-कुशलता का विकास होता है
(ग) परमपद की प्राप्ति होती है
(घ) आत्मबल प्राप्त होता है।

5. परमुखापेक्षी किसे कहते हैं–
(क) जो दूसरों से मुँह फेर लेता है
(ख) जो दूसरों की सहायता करता है
(ग) जो दूसरों से सहायता की अपेक्षा करता है
(घ) जो दूसरों की उपेक्षा करता है।

उत्तर— **1.** (ख) **2.** (क) **3.** (घ) **4.** (क) **5.** (ग)।

(21) महात्माओं और विद्वानों का सबसे बड़ा लक्षण है–आवाज़ को ध्यान से सुनना। यह आवाज़ कुछ भी हो सकती है। कौओं की कर्कश आवाज़ से लेकर नदियों की छलछल तक। मार्टिन लूथर किंग के भाषण से लेकर किसी पागल के बड़बड़ाने तक। अमूमन ऐसा होता नहीं। सच यह है कि हम सुनना चाहते ही नहीं। बस बोलना चाहते हैं। हमें लगता है कि इससे लोग हमें बेहतर तरीके से समझेंगे। हालाँकि ऐसा होता नहीं। हमें पता ही नहीं चलता और अधिक बोलने की कला हमें अनसुना करने की कला में पारंगत कर देती है। एक मनोवैज्ञानिक ने अपने अध्ययन में पाया कि जिन घरों के अभिभावक ज़्यादा बोलते हैं, वहाँ बच्चों में सही-गलत से जुड़ा स्वाभाविक ज्ञान कम विकसित हो पाता है; क्योंकि ज़्यादा बोलना बातों को विरोधाभासी तरीके से सामने रखता है और सामने वाला बस शब्दों के जाल में फँसकर रह जाता है। बात औपचारिक हो या अनौपचारिक, दोनों स्थितियों में हम दूसरे की न सुन, बस हावी होने की कोशिश करते हैं। खुद ज़्यादा बोलने और दूसरों को अनसुना करने से ज़ाहिर होता है कि हम अपने बारे में ज़्यादा सोचते हैं और दूसरों के बारे में कम। ज़्यादा बोलने वालों के दुश्मनों की संख्या ज़्यादा होती है। अगर आप नए दुश्मन बनाना चाहते हैं तो अपने दोस्तों से ज़्यादा बोलें और अगर आप नए दोस्त बनाना चाहते हैं तो दुश्मनों से कम बोलें। अमेरिका के सर्वाधिक चर्चित राष्ट्रपति रूज़वेल्ट अपने माली तक के साथ कुछ समय बिताते और इस दौरान उसकी बातें ज़्यादा सुनने की कोशिश करते। वह कहते थे कि लोगों को अनसुना करना अपनी लोकप्रियता के साथ खिलवाड़ करने जैसा है। इसका लाभ यह मिला कि ज़्यादातर अमेरिकी नागरिक उनके सुख में सुखी होते, और दुःख में दुःखी। ***(CBSE 2016)***

1. महात्माओं और विद्वानों का सबसे बड़ा लक्षण है–

(क) दूसरों को उपदेश देना

(ख) परोपकार करना

(ग) आवाज़ को ध्यान से सुनना

(घ) किसी की बात पर ध्यान न देना।

2. निम्नलिखित कथन (A) तथा कारण (R) को ध्यानपूर्वक पढ़िए। उसके बाद दिए गए विकल्पों में से कोई एक सही विकल्प चुनकर लिखिए–

कथन (A)–हम सुनना चाहते ही नहीं, बस बोलना चाहते हैं।

कारण (R)–हमें यह है कि इससे लोग हमें बेहतर तरीके से समझ सकेंगे।

(क) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं और कारण (R), कथन (A) की सही व्याख्या करता है।

(ख) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों गलत हैं।

(ग) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।

(घ) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) उसकी गलत व्याख्या करता है।

3. अधिक बोलना इस बात का सूचक है कि–

(क) हम अपने बारे में अधिक सोचते हैं

(ख) हम दूसरों के बारे में कम सोचते हैं

(ग) हम अपने दुश्मनों की संख्या बढ़ा रहे हैं

(घ) उपर्युक्त सभी।

4. अधिक बोलने वाले अभिभावकों का बच्चों पर क्या प्रभाव पड़ता है–

(क) उनके बच्चे वाचाल बन जाते हैं

(ख) उनके बच्चों में सही-गलत के निर्णय का ज्ञान विकसित नहीं होता

(ग) उनके बच्चे मंदबुद्धि बन जाते हैं

(घ) उनके बच्चे सभ्य और शिष्ट बन जाते हैं

5. गद्यांश में अमेरिका के किस लोकप्रिय राष्ट्रपति का उदाहरण दिया गया है–

(क) अब्राहम लिंकन (ख) रूज़वेल्ट

(ग) जार्ज बुश (घ) रोनाल्ड रीगन।

उत्तर— **1.** (ग) **2.** (क) **3.** (घ) **4.** (ख) **5.** (ख)।

(22) हम एक ऐसे युग में जी रहे हैं, जहाँ एक तरफ़ भौतिक समृद्धि अपनी ऊँचाई पर है तो दूसरी तरफ़ चारित्रिक पतन की गहराई है। आधुनिकीकरण में उलझा मानव सफलता की नित नई परिभाषाएँ खोजता रहता है और अपनी अंतहीन इच्छाओं के रेगिस्तान में भटकता रहता है। ऐसे समय में सच्ची सफलता और सुख-शांति की प्यास से व्याकुल व्यक्ति अनेक मानसिक रोगों का शिकार बनता जा रहा है। हममें से कितने लोगों को इस बात का ज्ञान है कि जीवन में सफलता प्राप्त करना और सफल जीवन जीना, यह दोनों दो अलग-अलग बातें हैं। यह ज़रूरी नहीं कि जिसने अपने जीवन में साधारण कामनाओं को हासिल कर लिया हो, वह पूर्णतः संतुष्ट और प्रसन्न भी हो। अतः हमें गंभीरतापूर्वक इस बात को समझना चाहिए कि इच्छित फल को प्राप्त कर लेना ही सफलता नहीं है। जब तक हम अपने जीवन में नैतिक व आध्यात्मिक मूल्यों का सिंचन नहीं करेंगे, तब तक यथार्थ सफलता पाना हमारे लिए मुश्किल ही नहीं, अपितु असंभव कार्य हो जाएगा; क्योंकि बिना मूल्यों के प्राप्त सफलता केवल क्षणभंगुर सुख के समान रहती है।

कुछ निराशावादी लोगों का कहना है कि हम सफल नहीं हो सकते; क्योंकि हमारी तकदीर या परिस्थितियाँ ही ऐसी हैं। परंतु यदि हम अपना ध्येय निश्चित करके उसे अपने मन में बिठा लें तो फिर सफलता स्वयं हमारी ओर चलकर आएगी। सफल होना हर मनुष्य का जन्मसिद्ध अधिकार है, परंतु यदि हम अपनी विफलताओं के बारे में ही सोचते रहेंगे तो सफलता को कभी हासिल नहीं कर पाएँगे। अतः विफलताओं की चिंता न करें; क्योंकि वे तो हमारे जीवन का सौंदर्य हैं और संघर्ष जीवन का काव्य है, कई बार प्रथम आघात में पत्थर नहीं टूट पाता, उसे तोड़ने के लिए कई आघात करने पड़ते हैं, इसलिए सदैव अपने लक्ष्य को सामने रख आगे बढ़ने की ज़रूरत है। कहा भी गया है कि जीवन में सकारात्मक कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती। ***(CBSE 2016)***

1. मनुष्य के मानसिक रोग और अशांति का कारण किसे माना गया है–

(क) उसकी असफलता को (ख) उसकी सफलता को

(ग) उसकी अंतहीन इच्छाओं को (घ) उसके असंतोष को।

2. काव्यांश में जीवन का सौंदर्य किसे माना गया है–

(क) सफलताओं को (ख) विफलताओं को

(ग) शिक्षा प्राप्ति को (घ) यश-प्रतिष्ठा को।

3. निम्नलिखित कथन (A) तथा कारण (R) को ध्यानपूर्वक पढ़िए। उसके बाद दिए गए विकल्पों में से कोई एक सही विकल्प चुनकर लिखिए–

कथन (A)–इच्छित फल को प्राप्त कर लेना ही सफलता नहीं है।

कारण (R)–सफल होना हर मनुष्य का जन्म सिद्ध अधिकार है।

(क) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों गलत हैं।

(ख) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) गलत है।

(ग) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) उसकी गलत व्याख्या करता है।

(घ) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं और कारण (R), कथन (A) की सही व्याख्या करता है।

4. **वास्तविक सफलता पाने के लिए क्या आवश्यक है–**
   (क) धन-दौलत
   (ख) शारीरिक शक्ति
   (ग) साधन संपन्नता
   (घ) नैतिक व आध्यात्मिक मूल्य।
5. **सफल जीवन जीना और सफलता प्राप्त करना दोनों हैं–**
   (क) एक समान (ख) अलग-अलग
   (ग) परस्पर विरोधी (घ) एक-दूसरे के पूरक।

उत्तर— 1. (ग) **2.** (ख) **3.** (ग) **4.** (घ) **5.** (ख)।

(23) वर्तमान को देख-समझकर ही भविष्य का अनुमान लगाया जा सकता है। जिस वृक्ष को सघन छायादार और विशाल बनना होता है, उसके पात आरंभ से ही घने, कोमल और चिकने रहा करते हैं। एक और कहावत भी काफ़ी प्रसिद्ध है कि 'होनहार बिरवान के होत चीकने पात'।

वर्तमान में चल रही भारत की प्रगति एवं विकास को देखकर इस बात का सहज अनुमान लगाया जा सकता है। विश्व में अनेक देशों, वहाँ के भविष्यवक्ताओं ने इस प्रकार के अर्थात् भारत के भविष्य के बारे में कई तरह की घोषणाएँ भी कर रखी हैं एवं समय-समय पर करते रहते हैं कि इक्कीसवीं सदी में भारत विश्व की एक विशाल एवं महानशक्ति होगा। वह हर स्तर पर हर प्रकार से उन्नत एवं समृद्ध होगा। आज यद्यपि अनेक प्रकार की अराजकताओं, भ्रष्टाचारों एवं बुराइयों से भारत ग्रस्त है, फिर भी यह नहीं कहा जा सकता कि स्वतंत्रता-प्राप्ति के बाद भारत ने कुछ प्रगति नहीं की है। निश्चित रूप से प्रगति की है और काफ़ी तीव्रगति से यह देश आगे बढ़ा एवं निरंतर बढ़ रहा है। भारत की कई प्रकार से बुरी एवं नीचा दिखाने वाली आलोचना-प्रत्यालोचनाएँ होती रहने पर भी उसकी बात को महत्त्व दिया जाता है, बड़े ध्यान से सुना और गुना जाता है। यह इस बात का प्रमाण है कि भारत प्रगति एवं विकास की राह पर निरंतर गतिशील है। इससे ही उसका सहज अनुमान लगाया जा सकता है कि इक्कीसवीं सदी में भारत विश्वशक्ति होगा।

(CBSE 2017)

1. **निम्नलिखित कथन (A) तथा कारण (R) को ध्यानपूर्वक पढ़िए। उसके बाद दिए गए विकल्पों में से कोई एक सही विकल्प चुनकर लिखिए–**

   कथन (A)–वर्तमान को देख-समझकर ही भविष्य का अनुमान लगाया जा सकता है।

   कारण (R)–इक्कीसवीं सदी में भारत विश्वशक्ति होगा।
   (क) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) उसकी गलत व्याख्या करता है।
   (ख) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं और कारण (R), कथन (A) की सही व्याख्या करता है।
   (ग) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों गलत हैं।
   (घ) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।
2. **भविष्यवक्ताओं ने भारत के विषय में क्या भविष्यवाणी की है–**
   (क) भारत बहुत कमज़ोर हो जाएगा
   (ख) भारत इक्कीसवीं सदी में महाशक्ति होगा
   (ग) भारत किसी आपदा का शिकार होगा
   (घ) भारत बहुत समृद्ध हो जाएगा।
3. **भारत की प्रगति और उसके प्रभाव का क्या प्रमाण है–**
   (क) विश्व के देश उससे डरने लगे हैं
   (ख) विश्व के देश उसके मित्र बन गए हैं
   (ग) विश्व पटल पर उसकी बात सुनी और गुनी जाती है
   (घ) वह महाशक्ति बन गया है।
4. **हमारे देश की प्रगति में सबसे बड़ी बाधा है–**
   (क) अराजकता (ख) भ्रष्टाचार
   (ग) सामाजिक बुराइयाँ (घ) ये सभी।
5. **'विश्वशक्ति' में समास है–**
   (क) तत्पुरुष (ख) कर्मधारय
   (ग) द्वंद्व (घ) बहुव्रीहि।

उत्तर— 1. (क) **2.** (ख) **3.** (ग) **4.** (घ) **5.** (क)।

(24) प्रतिभा किसी की मोहताज नहीं होती। इसके आगे सारी समस्याएँ बौनी हैं, लेकिन समस्या एक प्रतिभा को खुद दूसरी प्रतिभा से होती है। बहुमुखी प्रतिभा का होना, अपने भीतर एक प्रतिभा के बजाय दूसरी प्रतिभा को खड़ा करना है। इससे हमारा नुकसान होता है। कितना और कैसे?

मन की दुनिया की एक विशेषज्ञ कहती हैं कि बहुमुखी होना आसान है, बजाय एक खास विषय के विशेषज्ञ होने की तुलना में। बहुमुखी लोग स्पर्धा से घबराते हैं। कई विषयों पर उनकी पकड़ इसलिए होती है कि वे एक में स्पर्धा होने पर दूसरे की ओर भागते हैं। वे आलोचना से भी डरते हैं और अपने काम में तारीफ़ सुनना चाहते हैं। बहुमुखी लोगों में सबसे महान माने जाने वाले माइकल एंजेलो से लेकर अपने यहाँ रवींद्रनाथ टैगोर जैसे कई लोग। लेकिन आज ऐसे लोगों की पूछ-परख कम होती है। ऐसे लोग प्रतिभाशाली आज भी माने जाते हैं, लेकिन असफल होने की आशंका उनके लिए अधिक होती है। आज वे लोग 'विंची सिंड्रोम' से पीड़ित माने जाते हैं, जिनकी पकड़ दो-तीन या इससे ज़्यादा क्षेत्रों में हो, लेकिन हर क्षेत्र में उनसे बेहतर उम्मीदवार मौजूद हों।

बहुमुखी प्रतिभा वाले लोगों के भीतर कई कामों को साकार करने की इच्छा बहुत तीव्र होती है। उनकी उत्सुकता उन्हें एक-से-दूसरे क्षेत्र में हाथ आज़माने को बाध्य करती है। समस्या तब होती है, जब यह हाथ आज़माना दखल करने जैसा हो जाता है। वे न इधर के रह जाते हैं, और न उधर के। प्रबंधन की दुनिया में—'एक के साधे सब सधे, सब साधे सब जाए' का मंत्र ही शुरू से प्रभावी है। यहाँ उस पर ज़्यादा फोकस नहीं किया जाता, जो सारे अंडे एक टोकरी में न रखने की बात करता है। हम दूसरे क्षेत्रों में हाथ आज़मा सकते हैं, पर एक क्षेत्र के महारथी होने में ब्रेकर की भूमिका न अदा करें। ***(CBSE 2017)***

1. **किसके आगे सारी समस्याएँ बौनी हैं–**
   (क) धन के आगे (ख) बल के आगे
   (ग) प्रतिभा के आगे (घ) साधन के आगे।
2. **बहुमुखी प्रतिभा क्या है–**
   (क) बहुत से मुख वाली प्रतिभा
   (ख) बोलने वाली प्रतिभा
   (ग) अनेक मुखों से प्रतिभा का बखान करना
   (घ) अपने भीतर अनेक प्रतिभाएँ खड़ी करना।
3. **निम्नलिखित कथन (A) तथा कारण (R) को ध्यानपूर्वक पढ़िए। उसके बाद दिए गए विकल्पों में से कोई एक सही विकल्प चुनकर लिखिए–**

   कथन (A)–बहुमुखी लोग स्पर्धा से घबराते हैं।

   कारण (R)–आज ऐसे लोगों की पूछ-परख बहुत अधिक होती है।
   (क) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों गलत हैं।
   (ख) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।
   (ग) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) गलत है।
   (घ) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं और कारण (R), कथन (A) की सही व्याख्या करता है।

4. **बहुमुखी प्रतिभा वालों में किसे महान माना गया है–**
(क) रवींद्रनाथ टैगोर को (ख) न्यूटन को
(ग) माइकल एंजेलो को (घ) गांधीजी को।

5. **प्रबंधन के क्षेत्र में कैसे लोगों की आवश्यकता होती है–**
(क) जो एक उपाय से सभी समस्याओं का समाधान कर सकें
(ख) जो सारे अंडे एक टोकरी में न रखने की बात करते हैं
(ग) जो हर व्यक्ति के लिए अलग-अलग नियमों के पक्षधर होते हैं
(घ) उपर्युक्त में से कोई नहीं।

उत्तर— **1.** (ग) **2.** (घ) **3.** (ग) **4.** (ग) **5.** (क)।

(25) पता नहीं क्यों, उनकी कोई नौकरी लंबी नहीं चलती थी। मगर इससे वह न तो परेशान होते, न आतंकित और न ही कभी निराशा उनके दिमाग में आती। यह बात उनके दिमाग में आई कि उन्हें अब नौकरी के चक्कर में रहने की बजाय अपना काम शुरू करना चाहिए। नई ऊँचाई तक पहुँचने का उन्हें यही रास्ता दिखाई दिया। सत्य है, जो बड़ा सोचता है, वही एक दिन बड़ा करके भी दिखाता है और आज इसी सोच के कारण उनकी गिनती बड़े व्यक्तियों में होती है। हम अक्सर इंसान के छोटे-बड़े होने की बातें करते हैं, पर दरअसल इंसान की सोच ही उसे छोटा या बड़ा बनाती है। स्वेट मार्डेन अपनी पुस्तक **'*बड़ी सोच का बड़ा कमाल*'** में लिखते हैं कि यदि आप दरिद्रता की सोच को ही अपने मन में स्थान दिए रहेंगे तो आप कभी धनी नहीं बन सकते, लेकिन यदि आप अपने मन में अच्छे विचारों को ही स्थान देंगे और दरिद्रता, नीचता आदि कुविचारों की ओर से मुँह मोड़े रहेंगे और उनको अपने मन में कोई स्थान नहीं देंगे तो आपकी उन्नति होती जाएगी और समृद्धि के भवन में आप आसानी से प्रवेश कर सकेंगे। 'भारतीय चिंतन में ऋषियों ने ईश्वर के संकल्पमात्र से सृष्टि रचना को स्वीकार किया है और यह संकेत दिया है कि व्यक्ति जैसा बनना चाहता है, वैसा बार-बार सोचे। व्यक्ति जैसा सोचता है, वह वैसा ही बन जाता है।' सफलता की ऊँचाइयों को छूने वाले व्यक्तियों का मानना है कि सफलता उनके मस्तिष्क से नहीं, अपितु उनकी सोच से निकलती है। व्यक्ति में सोच की एक ऐसी जादुई शक्ति है कि यदि वह उसका उचित प्रयोग करे तो कहाँ-से-कहाँ पहुँच सकता है। इसलिए सदैव बड़ा सोचें, बड़ा सोचने से बड़ी उपलब्धियाँ हासिल होंगी। फ़ायदे बड़े होंगे और देखते-देखते आप अपनी बड़ी सोच द्वारा बड़े आदमी बन जाएँगे। इसके लिए हैज़लिट कहते हैं—महान सोच, जब कार्यरूप में परिणत हो जाती है, तब वह महान कृति बन जाती है। ***(CBSE 2017)***

1. **गद्यांश में कैसे व्यक्ति के बारे में चर्चा की गई है–**
(क) ऊँची सोच वाले आशावादी व्यक्ति के बारे में
(ख) नौकरी के पीछे दौड़ने वाले के बारे में
(ग) एक असंतोषी और निराशावादी के बारे में
(घ) अकर्मण्य और आंतकित रहने वाले के बारे में।

2. **निम्नलिखित कथन (A) तथा कारण (R) को ध्यानपूर्वक पढ़िए। उसके बाद दिए गए विकल्पों में से कोई एक सही विकल्प चुनकर लिखिए–**

कथन (A)–हम इंसान के छोटे-बड़े होने का बात करते हैं।

कारण (R)–इंसान की सोच ही उसे छोटा या बड़ा बनाती है।
(क) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों गलत हैं।
(ख) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।
(ग) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) उसकी गलत व्याख्या करता है।
(घ) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं और कारण (R), कथन (A) की सही व्याख्या करता है।

3. **भारतीय विचारधारा में संकल्प और चिंतन का क्या महत्त्व है–**
(क) मनुष्य जैसा सोचता है, वह वैसा ही बन जाता है
(ख) संकल्प से कार्य में सफलता मिलती है
(ग) चिंतन से समस्याओं का समाधान होता है
(घ) संकल्प और चिंतन सजीव की पहचान है।

4. **'बड़ी सोच का बड़ा कमाल' किसकी पुस्तक है–**
(क) जवाहरलाल नेहरू की (ख) महात्मा गांधी की
(ग) रवींद्रनाथ टैगोर की (घ) स्वेट मार्डेन की।

5. **बड़ा बनने के लिए क्या आवश्यक है–**
(क) धन-दौलत (ख) जन शक्ति
(ग) बड़ी सोच (घ) राजसत्ता।

उत्तर— **1.** (क) **2.** (घ) **3.** (क) **4.** (घ) **5.** (ग)।

(26) हँसी भीतरी आनंद का बाहरी चिह्न है। जीवन की सबसे प्यारी और उत्तम-से-उत्तम वस्तु एक बार हँस लेना तथा शरीर को अच्छा रखने की अच्छी-से-अच्छी दवा एक बार खिलखिला उठना है। पुराने लोग कह गए हैं कि हँसो और पेट फुलाओ। हँसी कितने ही कला-कौशलों से भली है। जितना ही अधिक आनंद से हँसोगे, उतनी ही आयु बढ़ेगी। एक यूनानी विद्वान कहता है कि सदा अपने कर्मों पर खीझने वाला हेरीक्लेस बहुत कम जिया, पर प्रसन्न मन डेमाक्रीट्स 109 वर्ष तक जिया। हँसी-खुशी का नाम जीवन है। जो रोते हैं, उनका जीवन व्यर्थ है। कवि कहता है–'ज़िंदगी ज़िंदादिली का नाम है, मुर्दा दिल क्या खाक जिया करते हैं।' मनुष्य के शरीर के वर्णन पर एक विलायती विद्वान ने पुस्तक लिखी है। उसमें वह कहता है कि उत्तम सुअवसर की हँसी उदास-से-उदास मनुष्य के चित्त को प्रफुल्लित कर देती है। आनंद एक ऐसा प्रबल इंजन है कि उससे शोक और दुःख की दीवारों को ढा सकते हैं। प्राण-रक्षा के लिए सदा सब देशों में उत्तम-से-उत्तम उपाय मनुष्य के चित्त को प्रसन्न रखना है। सुयोग्य वैद्य अपने रोगी के कानों में आनंदरूपी मंत्र सुनाता है। एक अंग्रेज़ डॉक्टर कहता है कि किसी नगर में दवाई लदे हुए बीस गधे ले जाने से एक हँसोड़ आदमी को ले जाना अधिक लाभकारी है। ***(CBSE 2018)***

1. **हँसी क्या है–**
(क) एक पागलपन है
(ख) भीतरी आनंद का बाहरी चिह्न है
(ग) दुःख की अभिव्यक्ति है
(घ) दूसरों का उपहास है।

2. **निम्नलिखित कथन (A) तथा कारण (R) को ध्यानपूर्वक पढ़िए। उसके बाद दिए गए विकल्पों में से कोई एक सही विकल्प चुनकर लिखिए–**

कथन (A)–हँसी कितने ही कला-कौशलों से भली है।

कारण (R)–जितने ही अधिक आनंद से हँसोगे, उतनी ही आयु बढ़ेगी।
(क) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं और कारण (R), कथन (A) की सही व्याख्या करता है।
(ख) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) उसकी गलत व्याख्या करता है।
(ग) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों गलत हैं।
(घ) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।

3. **पुराने समय में लोगों ने हँसी को महत्त्व क्यों दिया–**
(क) हँसी से धन-दौलत प्राप्त होती है
(ख) हँसी से यश-प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती है
(ग) हँसी से आयु बढ़ती है
(घ) हँसी से सभी कार्य सिद्ध हो जाते हैं।

4. **हँसी को एक शक्तिशाली इंजन के समान क्यों कहा गया है–**
(क) इससे कठिन-से-कठिन कार्य किया जा सकता है
(ख) इससे शोक और दुःख की दीवारों को ढा सकते हैं
(ग) इससे हम आत्मरक्षा कर सकते हैं
(घ) इससे शत्रुओं पर विजय प्राप्त की जा सकती है।

5. **109 वर्ष तक कौन जीवित रहा–**
(क) हेरीक्लेस (ख) अरस्तू
(ग) डेमाक्रीट्स (घ) जॉनसन।

उत्तर— 1. (ख) 2. (क) 3. (ग) 4. (ख) 5.(ग)।

(27) संस्कृत में एक कहावत है कि दुर्जन दूसरों के राई के समान मामूली दोषों को पहाड़ के समान बड़ा बनाकर देखता है और अपने पहाड़ के समान बड़े पापों को देखते हुए भी नहीं देखता। सज्जन या महात्मा ठीक इससे विपरीत होते हैं। उनका ध्यान दूसरों की बजाय केवल अपने दोषों पर जाता है। अधिकांश व्यक्तियों में कोई-न-कोई बुराई अवश्य होती है। कोई भी बुराई न होने पर व्यक्ति देवता की कोटि में आ जाता है। मनुष्य को अपनी बुराइयों को दूर करने का प्रयत्न करना चाहिए, न कि दूसरों की कमियों को लेकर छींटाकशी करने या टीका-टिप्पणी करने का। अपने मन की परख मन को पवित्र करने का सबसे उत्तम साधन है। आत्मनिरीक्षण आत्मा की उन्नति का सर्वश्रेष्ठ मार्ग है। महात्मा कबीर ने कहा है कि जब मैंने मन की पड़ताल की तो मुझे अपने जैसा बुरा कोई न मिला। महात्मा गांधी ने कई बार स्पष्ट रूप से कहा था कि मैंने जीवन में हिमालय जैसी बड़ी भूल की है। अपनी भूलों को ध्यान देना या उन्हें स्वीकार करना आत्मबल का चिह्न है। जो लोग दूसरों के सामने अपनी भूल नहीं मानते और न ही अपने को दोषी स्वीकार करते हैं, वे सबसे बड़े कायर हैं, जिसका अंतःकरण शीशे के समान उजला है, उसे झट अपनी भूल महसूस हो जाती है। मन तो दर्पण है। मन में पाप है तो जग में पाप दिखाई देता है। पवित्र आचरण वाले मन को देखते हैं तो उन्हें लगता है कि अभी इसमें कोई कमी रह गई है। इसलिए वे अपने को बुरा कहते हैं। यही उनकी नम्रता व साधना है।

1. **सज्जन के चरित्र की क्या विशेषता है–**
(क) वह दूसरों के दोष देखता है
(ख) वह अपने दोषों पर ध्यान देता है
(ग) वह दूसरों को सुधारना चाहता है
(घ) वह केवल अपना भला चाहता है।

2. **कोई भी बुराई न होने पर मनुष्य किस श्रेणी में आ जाता है–**
(क) महात्मा की (ख) राक्षस की
(ग) देवता की (घ) दुर्जन की।

3. **निम्नलिखित कथन (A) तथा कारण (R) को ध्यानपूर्वक पढ़िए। उसके बाद दिए गए विकल्पों में से कोई एक सही विकल्प चुनकर लिखिए–**

कथन (A)–अधिकांश व्यक्तियों में कोई-न-कोई बुराई अवश्य होती है।

कारण (R)–कोई भी बुराई न होने पर मनुष्य देवता की कोटि में आ जाता है।

(क) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों गलत हैं।
(ख) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) गलत है।
(ग) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।
(घ) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं और कारण (R), कथन (A) की सही व्याख्या करता है।

4. **सबसे बड़ा कायर कौन है–**
(क) जो युद्ध से भाग जाता है
(ख) जो अपनी भूल स्वीकार करता है
(ग) जो अपनी भूल स्वीकार नहीं करता है
(घ) जिसका मन कलुषित होता है।

5. **मन को किसके समान बताया गया है–**
(क) तालाब के (ख) दर्पण के
(ग) फूलों के (घ) वायु के।

उत्तर— 1. (ख) 2. (ग) 3. (घ) 4. (ग) 5. (ख)।

(28) "सफलता चाहने वाले मनुष्य का प्रथम कर्तव्य यह देखना है कि उसकी रुचि किन कार्यों की ओर अधिक है। यह बात गलत है कि हर कोई मनुष्य हर एक काम कर सकता है। लॉर्ड वेस्टरफील्ड स्वाभाविक प्रवृत्तियों के काम को अनावश्यक समझते थे और केवल परिश्रम को ही सफलता का आधार मानते थे। इसी सिद्धांत के अनुसार उन्होंने अपने बेटे स्टेनहाप को, जो सुस्त, ढीलाढाला, असावधान था, सत्पुरुष बनाने का प्रयास किया। वर्षों परिश्रम करने के बाद भी लड़का ज्यों-का-त्यों रहा और जीवन-भर योग्य न बन सका। स्वाभाविक प्रवृत्तियों को जानना कठिन भी नहीं है, बचपन के कामों को देखकर बताया जा सकता है कि बच्चा किस प्रकार का मनुष्य होगा। प्रायः यह संभावना प्रबल होती है कि छोटी आयु में कविता करने वाला कवि, सेना बनाकर चलने वाला सेनापति, भुट्टे चुराने वाला चोर-डाकू, पुरजे कसने वाला मैकेनिक और विज्ञान में रुचि रखने वाला वैज्ञानिक बनेगा।

जब यह विदित हो जाए कि लड़के की रुचि किस काम की ओर है तब यह करना चाहिए कि उसे उसी विषय में ऊँची शिक्षा दिलाई जाए। ऊँची शिक्षा प्राप्त करके मनुष्य अपने काम-धंधे में कम परिश्रम से अधिक सफल हो सकता है, जिनके काम-धंधे का पूर्ण प्रतिबिंब बचपन में नहीं दिखता, वे अपवाद ही हैं।

प्रत्येक मनुष्य में एक विशेष कार्य को अच्छी प्रकार करने की शक्ति होती है। वह बड़ी दृढ़ और उत्कृष्ट होती है। वह देर तक नहीं छिपती। उसी के अनुकूल व्यवसाय चुनने से ही सफलता मिलती है। जीवन में यदि आपने सही कार्यक्षेत्र चुन लिया तो समझ लीजिए कि बहुत बड़ा काम कर लिया। ***(CBSE 2019)***

1. **सफलता चाहने वाले के लिए यह देखना आवश्यक है कि–**
(क) उसके पास कितनी ताक़त है
(ख) वह कितना परिश्रम कर सकता है
(ग) उसकी रुचि किन कार्यों में अधिक है
(घ) उसके पास कितने साधन हैं।

2. **लॉर्ड वेस्टरफील्ड का क्या सिद्धांत था–**
(क) वे परिश्रम को व्यर्थ समझते थे
(ख) स्वाभाविक प्रवृत्तियों को आवश्यक समझते थे
(ग) साधनों को सफलता का आधार मानते थे
(घ) स्वाभाविक प्रवृत्तियों को अनावश्यक और परिश्रम को सफलता का आधार मानते थे।

3. **लॉर्ड वेस्टरफील्ड ने अपने सिद्धांत को सर्वप्रथम किस पर आज़माया–**
(क) अपने बेटे पर (ख) अपने मित्र पर
(ग) स्वयं अपने ऊपर (घ) अपने शिष्य पर।

4. **निम्नलिखित कथन (A) तथा कारण (R) को ध्यानपूर्वक पढ़िए। उसके बाद दिए गए विकल्पों में से कोई एक सही विकल्प चुनकर लिखिए–**
कथन (A)–स्वाभाविक प्रवृत्तियों को जानना कठिन नहीं है।
कारण (R)–बचपन के कामों को देखकर बताया जा सकता है कि बच्चा कैसा मनुष्य होगा।

(क) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं और कारण (R), कथन (A) की सही व्याख्या करता है।
(ख) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) उसकी गलत व्याख्या करता है।
(ग) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों गलत हैं।
(घ) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।

5. जीवन में सबसे बड़ा कार्य क्या है–
(क) शिक्षा प्राप्त करना
(ख) धन-दौलत कमाना
(ग) सही कार्यक्षेत्र का चुनाव करना
(घ) जो मिल जाए, वही कार्य कर लेना।

उत्तर— **1.** (ग) **2.** (घ) **3.** (क) **4.** (क) **5.** (ग)।

(29) अपनी सभ्यता का जब मैं अवलोकन करता हूँ, तब लोगों के काम के संबंध की उनकी विचारधारा के अनुसार उन्हें विभाजित करने लगता हूँ। एक वर्ग में वे लोग आते हैं, जो काम को उस घृणित आवश्यकता के रूप में देखते हैं, जिसकी उनके लिए उपयोगिता केवल धन अर्जित करना है। वे अनुभव करते हैं कि जब दिनभर का श्रम समाप्त हो जाता है, तब वे जीना सचमुच शुरू करते हैं और अपने आप में होते हैं। अब वे काम में लगे होते हैं, तब उनका मन भटकता रहता है। काम को वे उतना महत्त्व देने का कभी विचार नहीं करते, क्योंकि केवल आमदनी के लिए ही उन्हें काम की आवश्यकता है। दूसरे वर्ग के लोग अपने काम को आनंद और आत्मपरितोष पाने के एक सुयोग के रूप में देखते हैं। वे धन इसलिए कमाना चाहते हैं ताकि अपने काम में अधिक एकनिष्ठता के साथ समर्पित हो सकें। जिस काम में वे संलग्न होते हैं, उसकी पूजा करते हैं।

पहले वर्ग में केवल वे लोग ही नहीं आते हैं, जो बहुत कठिन और अरुचिकर काम करते हैं। उसमें बहुत-से संपन्न लोग भी सम्मिलित हैं, जो वास्तव में कोई काम नहीं करते हैं। ये सभी धन को ऐसा कुछ समझते हैं, जो उन्हें काम करने के अभिशाप से बचाता है। इसके सिवाय कि उनका भाग्य अच्छा रहा है, वे अन्यथा उन कारखानों के मजदूरों की तरह ही हैं, जो अपने दैनिक काम को जीवन का सबसे बड़ा अभिशाप समझते हैं। उनके लिए काम कोई घृणित वस्तु है और धन वांछनीय, क्योंकि काम से छुटकारा पाने के साधन का प्रतिनिधित्व यही धन करता है। यदि काम को वे टाल सकें और फिर भी धन प्राप्त हो जाए, तो खुशी से यही करेंगे।

जो लोग काम में अनुरक्त हैं तथा उसके प्रति समर्पित हैं, ऐसे कलाकार, विद्वान और वैज्ञानिक दूसरे वर्ग में सम्मिलित हैं। वस्तुओं को बनाने और खोजने में वे हमेशा दिलचस्पी रखते हैं। इसके अंतर्गत परंपरागत कारीगर भी आते हैं, जो किसी वस्तु को रूप देने में गर्व और आनंद का वास्तविक अनुभव करते हैं। अपनी मशीनों को ममत्वभरी सावधानी से चलाने और उनका रख-रखाव करने वाले कुशल मिस्त्री और इंजीनियर इसी वर्ग से संबंधित हैं। ***(CBSE 2020)***

1. लेखक ने लोगों का विभाजन किस आधार पर किया है–
(क) धर्म के आधार पर
(ख) जाति के आधार पर
(ग) भाषा के आधार पर
(घ) कार्य के संबंध में उनकी विचारधारा के आधार पर।

2. लेखक ने लोगों को कितने वर्गों में विभाजित किया है–
(क) दो वर्गों में (ख) तीन वर्गों में
(ग) चार वर्गों में (घ) पाँच वर्गों में।

3. निम्नलिखित कथन (A) तथा कारण (R) को ध्यानपूर्वक पढ़िए। उसके बाद दिए गए विकल्पों में से कोई एक सही विकल्प चुनकर लिखिए–

कथन (A)–पहले वर्ग में बहुत से संपन्न लोग भी सम्मिलित हैं।
कारण (R)–वे लोग काम में अनुरक्त हैं और उसके प्रति समर्पित हैं।

(क) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों गलत हैं।
(ख) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।
(ग) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं और कारण (R), कथन (A) की सही व्याख्या करता है।
(घ) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) उसकी गलत व्याख्या करता है।

4. दूसरे वर्ग के लोगों का कार्य के विषय में क्या दृष्टिकोण है–
(क) वे कार्य को बोझ समझते हैं
(ख) वे कार्य को तुच्छ मानते हैं
(ग) वे कार्य को अपना शोषण समझते हैं
(घ) वे कार्य को आनंद और आत्मपरितोष का सुयोग मानते हैं।

5. काम के प्रति अनुरक्त और समर्पित लोगों के वर्ग में सम्मिलित हैं–
(क) कलाकार, विद्वान और वैज्ञानिक
(ख) परंपरागत कारीगर
(ग) कुशल मिस्त्री और इंजीनियर
(घ) उपर्युक्त सभी।

उत्तर— **1.** (घ) **2.** (क) **3.** (घ) **4.** (घ) **5.** (घ)।

(30) वर्तमान युग कंप्यूटर युग है। यदि भारतवर्ष पर नज़र दौड़ाकर देखें तो हम पाएँगे कि जीवन के लगभग सभी क्षेत्रों में कंप्यूटर का प्रवेश हो गया है। बैंक, रेलवे-स्टेशन, हवाई-अड्डे, डाकखाने, बड़े-बड़े उद्योग-कारखाने व्यवसाय हिसाब-किताब, रुपये गिनने तक की मशीनें कंप्यूटरीकृत हो गई हैं। अब भी यह कंप्यूटर का प्रारंभिक प्रयोग है। आने वाला समय इसके विस्तृत फैलाव का संकेत दे रहा है। प्रश्न उठता है कि क्या कंप्यूटर आज की ज़रूरत है? इसका उत्तर है–कंप्यूटर जीवन की मूलभूत अनिवार्य वस्तु तो नहीं है, किंतु इसके बिना आज की दुनिया अधूरी जान पड़ती है। सांसारिक गतिविधियों, परिवहन और संचार उपकरणों आदि का ऐसा विस्तार हो गया है कि उन्हें सुचारु रूप से चलाना अत्यंत कठिन होता जा रहा है।

पहले मनुष्य जीवन-भर में अगर सौ लोगों के संपर्क में आता था तो आज वह दो-हज़ार लोगों के संपर्क में आता है। पहले दिन में पाँच-दस लोगों से मिलता था तो आज पचास-सौ लोगों से मिलता है। पहले वह दिन में काम करता था तो आज रातें भी व्यस्त रहती हैं। आज व्यक्ति के संपर्क बढ़ रहे हैं, व्यापार बढ़ रहे हैं, गतिविधियाँ बढ़ रही हैं, आकांक्षाएँ बढ़ रही हैं, साधन बढ़ रहे हैं। इस अनियंत्रित गति को सुव्यवस्था देने की समस्या आज की प्रमुख समस्या है। कहते हैं आवश्यकता आविष्कार की जननी है। इस आवश्यकता ने अपने अनुसार निदान ढूँढ लिया है।

कंप्यूटर एक ऐसी स्वचालित प्रणाली है जो कैसी भी अव्यवस्था को व्यवस्था में बदल सकती है। हड़बड़ी में होने वाली मानवीय भूलों के लिए कंप्यूटर राम बाण औषधि है। क्रिकेट के मैदान में अंपायर की निर्णायक भूमिका हो या लाखों-करोड़ों की लंबी-लंबी गणनाएँ कंप्यूटर पलक झपकते ही आपकी समस्या हल कर सकता है। पहले इन कामों को करने वाले कर्मचारी हड़बड़ाकर काम करते थे, एक भूल से घबराकर और अधिक गड़बड़ी करते थे। परिणामस्वरूप काम कम, तनाव अधिक होता था। अब कंप्यूटर की सहायता से काफी सुविधा हो गई है। ***(CBSE 2020)***

1. वर्तमान युग कंप्यूटर का युग क्यों है–
(क) कंप्यूटर के बिना जीवन की कल्पना असंभव सी हो गई है
(ख) कंप्यूटर ने पूरे विश्व के लोगों को जोड़ दिया है
(ग) कंप्यूटर जीवन की अनिवार्य मूलभूत वस्तु बन गया है
(घ) कंप्यूटर मानव सभ्यता के सभी अंगों का अभिन्न अवयव बन चुका है।

2. **निम्नलिखित कथन (A) तथा कारण (R) को ध्यानपूर्वक पढ़िए। उसके बाद दिए गए विकल्पों में से कोई एक सही विकल्प चुनकर लिखिए–**

कथन (A)–कहते हैं आवश्यकता आविष्कार की जननी है।

कारण (R)–आवश्यकता ने अपने अनुसार निदान ढूँढ़ लिया है।

(क) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों गलत हैं।
(ख) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) गलत है।
(ग) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) उसकी गलत व्याख्या करता है।
(घ) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं और कारण (R), कथन (A) की सही व्याख्या करता है।

3. **गद्यांश के अनुसार किस आवश्यकता ने कंप्यूटर में अपना निदान ढूँढ़ लिया है–**
(क) अनियंत्रित कर्मचारियों को अनुशासित करने की
(ख) अनियंत्रित गति को सुव्यवस्था देने की
(ग) अधिक-से-अधिक लोगों से जुड़ जन-जागरण लाने की
(घ) अधिक-से-अधिक कार्य कभी भी व कहीं भी करने की।

4. **कंप्यूटर के प्रयोग से पहले अधिक तनाव क्यों होता था–**
(क) लंबी-लंबी गणनाएँ करनी पड़ती थीं
(ख) गलतियों के डर से कर्मचारी घबराए रहते थे
(ग) क्रिकेट मैचों में गलत निर्णय का ख़तरा रहता था
(घ) मानवीय भूलों के कारण बड़ी दुर्घटनाएँ होती थीं।

5. **कंप्यूटर के बिना आज की दुनिया अधूरी है क्योंकि–**
(क) सारी व्यवस्था, उपकरण और मशीनें कंप्यूटरीकृत हैं
(ख) कंप्यूटर ही मानव एकीकरण का आधार है
(ग) कंप्यूटर ने सारी प्रक्रियाएँ आसान बना दी हैं
(घ) कंप्यूटर द्वारा मानव सभ्यता अधिक समर्थ हो गई है।

उत्तर— **1.** (क) **2.** (घ) **3.** (ख) **4.** (ख) **5.** (ग)।

(31) पाठक आमतौर पर रूढ़िवादी होते हैं, वे सामान्यतः साहित्य में अपनी स्थापित मर्यादाओं की स्वीकृति या एक स्वप्न-जगत में पलायन चाहते हैं। साहित्य एक झटके में उन्हें अपने आस-पास के उस जीवन के प्रति सचेत करता है, जिससे उन्होंने आँखें मूँद रखी थीं। शुतुरमुर्ग़ अफ़्रीका के रेगिस्तानों में नहीं मिलते; वे हर जगह बहुतायत में उपलब्ध हैं। प्रौद्योगिकी के इस दौर का नतीजा जीवन के हर गोशे में नक़द फ़सल के लिए बढ़ता हुआ पागलपन है; और हमारे राजनीतिज्ञ, सत्ता के दलाल, व्यापारी, नौकरशाह-सभी लोगों को इस भगदड़ में नहीं पहुँचने, जैसा दूसरे करते हैं वैसा करने, चूहादौड़ में शामिल होने और कुछ-न-कुछ हासिल कर लेने को जिए जा रहे हैं। हम थककर साँस लेना और अपने चारों ओर निहारना, हवा के पेड़ में से गुज़रते वक़्त पत्तियों की मनहर लय-गतियों को और फूलों के जादुई रंगों को, फूली सरसों के चमकदार पीलेपन को, खिले मैदानों की घनी हरीतिमा को मर्मर ध्वनि के सौंदर्य, हिमाच्छादित शिखरों की भव्यता, समुद्र तट पर पछाड़ खाकर बिखरती हुई लहरों के घोष को देखना-सुनना भूल गए हैं।

कुछ लोग सोचते हैं कि पश्चिम का आधुनिकतावाद और भारत तथा अधिकांश तीसरी दुनिया के नव-औपनिवेशिक चिंतन के साथ अपनी जड़ों से अलगाव, व्यक्तिवादी अजनबियत में हमारा अनिवार्य बे-लगाम धँसाव, अचेतन के बिंब, बौद्धिकता से विद्रोह, यह घोषणा कि 'दिमाग़ अपनी रस्सी के अंतिम सिरे पर है, यथार्थवाद का विध्वंस, काम का ऐंद्रिक सुख मात्र रह जाना और मानवीय भावनाओं का व्यावसायीकरण तथा निम्नस्तरीयकरण इस अंधी घाटी में आ फँसने की वजह है। लेकिन वे भूल जाते हैं कि आधुनिकीकरण इतिहास की एक सच्चाई है, कि नई समस्याओं को जन्म देने और विज्ञान को अधिक जटिल बनाने के बावजूद आधुनिकीकरण, एक तरह से, मानव जाति की नियति है।

मेरा सुझाव है कि विवेकहीन आधुनिकता के बावजूद आधुनिकता की दिशा में धैर्यपूर्वक सुयोजित प्रयास होने चाहिए। एक आलोचक किसी नाली में भी झाँक सकता है, पर वह नाली-निरीक्षक नहीं होता। लेखक का कार्य दुनिया को बदलना नहीं, समझना है। साहित्य क्रांति नहीं करता; वह मनुष्यों का दिमाग बदलता है और उन्हें क्रांति की आवश्यकता के प्रति जागरूक बनाता है। ***(CBSE 2020)***

1. **गद्यांश में 'शुतुरमुर्ग़' की संज्ञा किसे दी गई है–**
(क) लेखक, जो संसार को समझना चाहता है
(ख) राजनीतिज्ञ, जो अपने स्वार्थ साधना चाहता है
(ग) पाठक, जो सपनों की दुनिया में रहना चाहता है
(घ) नौकरशाह, जो दूसरों जैसा बनने की होड़ में शामिल हैं।

2. **आधुनिकता की दिशा में सुयोजित प्रयास क्यों होने चाहिए–**
(क) इससे जीवन सुगम हो जाएगा तथा मानव प्रकृति का आनंद ले सकेगा
(ख) नई समस्याओं को जन्म लेने के पहले ही रोका जा सकेगा
(ग) आधुनिक होने की प्रक्रिया सदा से मानव सभ्यता का अंग रही है
(घ) इससे विज्ञान सरल हो, अधिक मानव कल्याणी हो सकेगा।

3. **निम्नलिखित कथन (A) तथा कारण (R) को ध्यानपूर्वक पढ़िए। उसके बाद दिए गए विकल्पों में से कोई एक सही विकल्प चुनकर लिखिए–**

कथन (A)–आधुनिकीकरण इतिहास की एक सच्चाई है।

कारण (R)–यह मानव जाति की नियति नहीं है।

(क) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों गलत हैं।
(ख) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) गलत है।
(ग) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।
(घ) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) उसकी गलत व्याख्या करता है।

4. **पाठक साहित्य से आमतौर पर क्या अपेक्षा रखते हैं–**
(क) साहित्य को हमारे मन की बात कहनी चाहिए
(ख) साहित्य को संसार को यथावत समझना चाहिए
(ग) साहित्य तनाव कम करने वाला होना चाहिए
(घ) साहित्य को जीवन कौशलों व मूल्यों की शिक्षा देनी चाहिए।

5. **लेखक के अनुसार साहित्य क्या कार्य करने के लिए प्रेरित करता है–**
(क) लोगों को यथार्थ से अवगत करा बदलाव के लिए
(ख) लोगों को जीवन की समस्याओं को भुला आगे बढ़ते जाने के लिए
(ग) लोगों को यथार्थवाद का विध्वंस करने के लिए
(घ) लोगों को भावनाओं व ऐंद्रिक सुख के ऊपर उठ कार्य करने के लिए।

उत्तर— **1.** (ग) **2.** (क) **3.** (ख) **4.** (ख) **5.** (क)।

(32) पशु को बाँधकर रखना पड़ता है, क्योंकि वह निरंकुश है। चाहे जहाँ-तहाँ चला जाता है, इधर-उधर मुँह मार देता है। क्या मनुष्य को भी इसी प्रकार दूसरों का बंधन स्वीकार करना चाहिए? क्या इससे उसमें मनुष्यत्व रह पाएगा। पशु के गले की रस्सी को एक हाथ में पकड़कर और दूसरे हाथ में एक लकड़ी लेकर जहाँ चाहो हाँककर ले जाओ। जिन लोगों को इसी प्रकार हाँके जाने का स्वभाव पड़ गया है, जिन्हें

कोई भी जिधर चाहे ले जा सकता है, काम में लगा सकता है, उन्हें भी पशु ही कहा जाएगा। पशु को चाहे कितना मारो, चाहे कितना उसका अपमान करो, बाद में खाने को दे दो, वह पूँछ और कान हिलाने लगेगा। ऐसे नर पशु भी बहुत से मिलेंगे जो कुचले जाने और अपमानित होने पर भी ज़रा-सी वस्तु मिलने पर चट संतुष्ट और प्रसन्न हो जाते हैं। कुत्ते को कितना ही ताड़ना देने के बाद उसके सामने एक टुकड़ा डाल दो, वह झट से मार-पीट को भूलकर उसे खाने लगेगा। यदि हम भी ऐसे ही हैं तो हम कौन हैं, इसे स्पष्ट कहने की आवश्यकता नहीं। पशुओं में भी कई पशु मार-पीट और अपमान को नहीं सहते। वे कई दिन तक निराहार रहते हैं, कई पशुओं ने तो प्राण त्याग दिए, ऐसा सुना जाता है। पर इस प्रकार के पशु मनुष्य-कोटि के हैं, उनमें मनुष्यत्व का समावेश है, यदि ऐसा कहा जाए तो कोई अत्युक्ति न होगी। ***(CBSE 2020)***

1. **कई पशुओं ने प्राण त्याग दिए क्योंकि–**
   (क) उन्हें विद्रोह करने की अपेक्षा प्राण त्यागना उचित लगा
   (ख) उन्हें तिरस्कृत हो जीवन जीना उचित नहीं लगा
   (ग) वह यह शिक्षा देना चाहते थे कि प्यार, मार-पीट से अधिक कारगर है
   (घ) वह यह दिखाना चाहते थे कि लोगों को उनकी आवश्यकता अधिक है न कि उन्हें लोगों की।
2. **बंधन स्वीकार करने से मनुष्य पर क्या प्रभाव पड़ेंगे–**
   (क) मनुष्य सामाजिक और व्यक्तिगत रूप से कम स्वतंत्र हो जाएगा
   (ख) मनुष्यत्व में व्यक्तिगत इच्छा व निर्णय का तत्त्व समाप्त हो जाएगा
   (ग) मनुष्य बँधे हुए पशु समान हो जाएगा
   (घ) मनुष्य की निरकुंशता में परिवर्तन हो जाएगा।
3. **मनुष्यत्व को परिभाषित करने हेतु कौन-सा मूल्य अधिक महत्त्वपूर्ण है–**
   (क) स्वतंत्रता (ख) न्याय
   (ग) शांति (घ) प्रेम।
4. **निम्नलिखित कथन (A) तथा कारण (R) को ध्यानपूर्वक पढ़िए। उसके बाद दिए गए विकल्पों में से कोई एक सही विकल्प चुनकर लिखिए–**
   कथन (A)–पशु को बाँधकर रखना पड़ता है।
   कारण (R)–वह निरंकुश होता है।
   (क) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों गलत हैं।
   (ख) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) उसकी गलत व्याख्या करता है।
   (ग) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।
   (घ) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं और कारण (R), कथन (A) की सही व्याख्या करता है।
5. **गद्यांश में नर और पशु की तुलना किन बातों को लेकर की गई है–**
   (क) पिटने की क्षमता।
   (ख) पूँछ-कान आदि को हिलाना।
   (ग) बंधन स्वीकार करना।
   (घ) लकड़ी द्वारा हाँके जाना।

उत्तर— **1.** (ख) **2.** (ख) **3.** (क) **4.** (घ) **5.** (ग)।

(33) व्यक्ति चित्त सब समय आदर्शों द्वारा चालित नहीं होता। जितने बड़े पैमाने पर मनुष्य की उन्नति के विधान बनाए गए, उतनी ही मात्रा में लोभ, मोह जैसे विकार भी विस्तृत होते गए, लक्ष्य की बात भूल गए, आदर्शों को मज़ाक का विषय बनाया गया और संयम को दकियानूसी मान लिया गया। परिणाम जो होना था, वह हो रहा है। यह कुछ थोड़े-से लोगों के बढ़ते हुए लोभ का नतीजा है, परंतु इससे भारतवर्ष के पुराने आदर्श और भी अधिक स्पष्ट रूप से महान और उपयोगी दिखाई देने लगे हैं। भारतवर्ष सदा कानून को धर्म के रूप में देखता आ रहा है। आज एकाएक कानून और धर्म में अंतर कर दिया गया है। धर्म को धोखा नहीं दिया जा सकता, कानून को दिया जा सकता है। यही कारण है कि जो धर्मभीरू हैं, वे भी त्रुटियों से लाभ उठाने में संकोच नहीं करते।

इस बात के पर्याप्त प्रमाण खोजे जा सकते हैं कि समाज के ऊपरी वर्ग में चाहे जो भी होता रहा हो, भीतर-बाहर भारतवर्ष अब भी यह अनुभव कर रहा है कि धर्म कानून से बड़ी चीज़ है। अब भी सेवा, ईमानदारी, सच्चाई और आध्यात्मिकता के मूल्य बने हुए हैं। वे दब अवश्य गए हैं, लेकिन नष्ट नहीं हुए हैं। आज भी वह मनुष्य से प्रेम करता है, महिलाओं का सम्मान करता है, झूठ और चोरी को गलत समझता है, दूसरों को पीड़ा पहुँचाने को पाप समझता है। ***(CBSE 2020)***

1. **मनुष्य ने आदर्शों को मज़ाक का विषय किस कारण बना लिया–**
   (क) कानून (ख) उन्नति
   (ग) लोभ (घ) धर्मभीरुता।
2. **निम्नलिखित कथन (A) तथा कारण (R) को ध्यानपूर्वक पढ़िए। उसके बाद दिए गए विकल्पों में से कोई एक सही विकल्प चुनकर लिखिए–**
   कथन (A)–व्यक्ति चित्त हर समय आदर्शों से चालित होता है।
   कारण (R)–आज एकाएक कानून और धर्म का अंतर समाप्त हो गया है।
   (क) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों गलत हैं।
   (ख) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) गलत है।
   (ग) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।
   (घ) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं और कारण (R), कथन (A) की सही व्याख्या करता है।
3. **भारतवर्ष में सेवा और सच्चाई के मूल्य .... रेखांकित के लिए विकल्प छाँटिए–**
   (क) मनुष्य की समाज पर निर्भरता में कमी होने के कारण इनमें ह्रास हुआ है
   (ख) जीवन में उन्नति के बड़े पैमाने के कारण कहीं छिप से गए हैं
   (ग) न्यायालयों में कानून की सत्याभासी धाराओं में उलझ कर रह गए हैं
   (घ) परमार्थ के लिए जीवन की बाजी लगाने वाले यह सिद्ध करते हैं कि यह व्यक्ति के मन को अभी भी नियंत्रित कर रहे हैं।
4. **भारतवर्ष का बड़ा वर्ग बाहर-भीतर कदाचित क्या अनुभव कर रहा है–**
   (क) धर्म, कानून से बड़ी चीज़ है
   (ख) कानून, धर्म से बड़ी चीज़ है
   (ग) संयम अशक्त और अकर्मण्य लोगों के लिए है
   (घ) आदर्श और उसूलों से यथार्थ जीवन असंभव है।
5. **निम्नलिखित में से सर्वाधिक उपयुक्त शीर्षक का चयन कीजिए–**
   (क) उन्नति के संदर्भ में जीवन मूल्यों की प्रासंगिकता
   (ख) मानव चित्त के आकर्षण निवारण में आदर्शों की भूमिका
   (ग) समाज कल्याण हेतु धर्म और कानून का सहअस्तित्व
   (घ) धार्मिक व सार्वभौमिक मूल्यों का एकीकरण।

उत्तर— **1.** (ग) **2.** (क) **3.** (ख) **4.** (क) **5.** (ग)।

(34) अच्छा नागरिक बनने के लिए भारत के प्राचीन विचारकों ने कुछ नियमों का प्रावधान किया है। इन नियमों में वाणी और व्यवहार की शुद्धि, कर्तव्य और अधिकार का समुचित निर्वाह, शुद्धतम पारस्परिक सद्भाव और सेवा की भावना आदि नियम बहुत महत्त्वपूर्ण माने गए हैं। ये सभी नियम यदि एक व्यक्ति के चारित्रिक गुणों के रूप में भी अनिवार्य माने जाएँ तो उसका अपना जीवन सुखी और आनंदमय हो सकता है। सभी गुणों का विकास एक बालक में यदि उसकी बाल्यावस्था से ही किया जाए तो वह अपने देश का श्रेष्ठ नागरिक बन सकता है। इन गुणों के कारण वह अपने परिवार, आस-पड़ोस, विद्यालय में अपने सहपाठियों एवं अध्यापकों के प्रति यथोचित व्यवहार कर सकेगा।

वाणी एवं व्यवहार की मधुरता सभी के लिए सुखदायक होती है, समाज में हार्दिक सद्भाव की वृद्धि करती है, किंतु अहंकारहीन व्यक्ति ही स्निग्ध वाणी और शिष्ट व्यवहार का प्रयोग कर सकता है। अहंकारी और दंभी व्यक्ति सदा अशिष्ट वाणी और व्यवहार का अभ्यासी होता है जिसका परिणाम यह होता है कि ऐसे आदमी के व्यवहार से समाज में शांति और सौहार्द का वातावरण नहीं बनता।

जिस प्रकार एक व्यक्ति समाज में रहकर अपने व्यवहार से कर्तव्य और अधिकार के प्रति सजग रहता है, उसी तरह देश के प्रति भी उसका व्यवहार कर्तव्य और अधिकार की भावना से भावित रहना चाहिए। उसका कर्तव्य हो जाता है कि न तो वह स्वयं कोई ऐसा काम करे और न ही दूसरों को करने दे, जिसमें देश के सम्मान, संपत्ति और स्वाभिमान को ठेस लगे।

समाज एवं देश में शांति बनाए रखने के लिए धार्मिक सहिष्णुता भी बहुत आवश्यक है। यह वृत्ति तभी आ सकती है जब व्यक्ति संतुलित व्यक्तित्व का हो। वह आंतरिक व बाहरी संघर्ष से परे सामाजिकता की अनुभूति से परिपूर्ण व्यक्तित्व होना चाहिए। ***(CBSE SQP 2021)***

1. **गद्यांश के संदर्भ में अच्छा नागरिक बनने के लिए नियमों का प्रावधान आवश्यक है, क्योंकि यह–**
   (क) स्वतंत्रता को बढ़ावा देता है जिससे वातावरण को शांति से परिपूर्ण करता है
   (ख) व्यक्तित्व को निखारकर जीवन को आमोद-प्रमोद से परिपूर्ण करता है
   (ग) व्यक्तित्व को निखारकर जीवन को सुख और मंगलकामना से परिपूर्ण करता है
   (घ) व्यक्ति को अहंकार, स्निग्ध वाणी और शिष्ट व्यवहार से परिपूर्ण करता है।
2. **निम्नलिखित कथन (A) तथा कारण (R) को ध्यानपूर्वक पढ़िए। उसके बाद दिए गए विकल्पों में से कोई एक सही विकल्प चुनकर लिखिए–**

   कथन (A)–वाणी और व्यवहार की मधुरता सभी के लिए सुखदायक होती है।

   कारण (R)–यह समाज में हार्दिक सद्भाव की वृद्धि करती है।
   (क) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों गलत हैं।
   (ख) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) गलत है।
   (ग) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) उसकी गलत व्याख्या करता है।
   (घ) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं और कारण (R), कथन (A) की सही व्याख्या करता है।
3. **अहंकारी और दंभी व्यक्ति सदा अभ्यासी होता है–**
   (क) अशिष्ट वाणी और व्यवहार का
   (ख) मधुर एवं अशिष्ट व्यवहार का
   (ग) अशिष्ट वाणी एवं व्यवहार की शुद्धि का
   (घ) स्निग्ध वाणी और अशिष्ट व्यवहार का।
4. **संतुलित व्यक्तित्व से तात्पर्य है–**
   (क) आंतरिक व बाहरी संघर्ष से संपूर्ण सामाजिकता की अनुभूति से परिपूर्ण व्यक्तित्व
   (ख) देश में पूर्णतः आदर्श नागरिक का व्यवहार करने वाला सुखदायक व्यक्तित्व
   (ग) आंतरिक व बाहरी संघर्ष से रहित संपूर्ण सामाजिकता की अनुभूति से परिपूर्ण व्यक्तित्व
   (घ) कर्तव्य और अधिकार के प्रति सजग रहने वाला भावुक प्रवृत्ति से परिपूर्ण व्यक्तित्व।
5. **धार्मिक सहिष्णुता की स्थापना आवश्यक है, क्योंकि इससे–**
   (क) अधिकार और कर्तव्य पर विजय प्राप्त हो जाएगी
   (ख) देश की संपत्ति को नुकसान नहीं पहुँचेगा
   (ग) भारतीय संविधान की प्रतिष्ठा बनी रहेगी
   (घ) समाज एवं देश में शांति व्यवस्था बनी रहेगी।

उत्तर— **1.** (ख) **2.** (घ) **3.** (क) **4.** (ग) **5.** (घ)।

(35) बड़ा बनने के लिए हमें विशाल काम करने की ज़रूरत नहीं होती, बल्कि प्रत्येक काम में विशालता के चिह्न खोजने पड़ते हैं। अपने अंतर्मन में सदैव जिज्ञासा को जन्म देना होता है। दुनिया में ज्ञान का जो बोलबाला है, उसमें हमारे कौतूहल की केंद्रीय भूमिका है। अल्बर्ट आइंस्टीन ने एक बार अपने साक्षात्कार में कहा था कि हमारी जिज्ञासा ही हमारे अस्तित्व का आधार है। बिना प्रश्न के हमारे जीवन में न गति आएगी और न कोई रस होगा जब हम चिंतन करते हैं, तब नई बातें सामने आती हैं। सवाल करने का ही परिणाम है कि नई तकनीक ऑटोमेशन और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस जैसी चीज़ें आज दुनिया में आ रही हैं। जब हम कहते हैं–क्यों, कैसे, क्या, तब हमारे अंदर की स्नायु प्राण ऊर्जा और संकल्प एक नई गति और उत्साह के साथ नवीनता की यात्रा करने लगते हैं।

हमें इस दुनिया की इतनी आदत पड़ चुकी है कि लीक से हटकर सोचना नहीं चाहते। कोई विभिन्नता नहीं, न ही कोई नवीनता है। यह कैसा जीवन है, जिसमें कोई कौतूहल नहीं, कोई आश्चर्य नहीं? इस जगत में हमारी स्थिति एक कीटाणु या विषाणु की तरह है, जो अपनी सुखमयी व्यवस्था में पड़े रहते हैं, लेकिन जो स्वतंत्र होते हैं, वे हृदय की आवाज़ सुनते हैं। जो बड़ा होना चाहते हैं, इस दुनिया और इसकी प्रत्येक घटना, वस्तु एवं स्थिति पर अपना आश्चर्य प्रकट करते हैं। प्रत्येक घटना और वस्तु से परे हटकर सोचने और उसको देखने की कोशिश जो करते हैं, यही बड़ा बनते हैं। जिज्ञासु मन और बुद्धि ही दर्शन और विज्ञान की दुनिया बनाते हैं। ***(CBSE SQP 2021)***

1. **प्रत्येक काम में विशालता के चिह्न खोजने से लेखक का अभिप्राय है–**
   (क) बड़ी सोच व्यक्ति को बड़ा बनने की प्रेरणा देती है
   (ख) प्रत्येक काम को महत्त्व देकर गहराई से समझें
   (ग) प्रत्येक काम को करने के लिए सदैव तत्पर रहें
   (घ) प्रत्येक काम का आयोजन बड़े पैमाने पर करें।
2. **निम्नलिखित कथन (A) तथा कारण (R) को ध्यानपूर्वक पढ़िए। उसके बाद दिए गए विकल्पों में से कोई एक सही विकल्प चुनकर लिखिए–**

   कथन (A)–बड़ा बनने के लिए अपने अंतर्मन में सदैव जिज्ञासा को जन्म देना होता है।

   कारण (R)–ज्ञान-प्राप्ति में हमारे कौतूहल की केंद्रीय भूमिका है।
   (क) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं और कारण (R), कथन (A) की सही व्याख्या करता है।
   (ख) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) उसकी गलत व्याख्या करता है।
   (ग) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।
   (घ) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों गलत हैं।

3. **नवीनता की यात्रा करने से हम परंपरागत प्रणालियों से विमुख हो रहे हैं। नवीनता के पक्षधर के रूप में इसकी आवश्यकता के लिए उपयुक्त तर्क है–**
   (क) हमारी मानसिक स्थिति एक कीटाणु या विषाणु की तरह है
   (ख) हमारे शारीरिक, मानसिक, चारित्रिक व राष्ट्रीय विकास के लिए है
   (ग) जो स्वतंत्र मानसिकता वाले होते हैं, वे दूसरों की आवाज़ सुनते हैं
   (घ) जब हम चिंतन करते हैं, तब नई बातें सामने आती हैं।
4. **लीक से हटकर सोच को विकसित करने के लिए आवश्यक है–**
   (क) सुखमय व्यवस्था
   (ख) हृदय की आवाज़ सुनना
   (ग) अंतर्मन में सदैव जिज्ञासा
   (घ) दर्शन और विज्ञान की दुनिया।
5. **जिज्ञासा ही हमारे अस्तित्व के आधार की परिचायक है, क्योंकि यह–**
   (क) व्यक्ति को नए ज़माने का वैज्ञानिक दर्शाती है
   (ख) शारीरिक व मानसिक रूप से क्रियाशील रखती है
   (ग) आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की उपयोगिता दर्शाती है
   (घ) विश्वव्यापी स्तर पर स्थिति निर्धारित करती है।

उत्तर— **1.** (ख) **2.** (क) **3.** (ख) **4.** (ग) **5.** (ख)।

(36) जानवरों में गधा सबसे बुद्धिहीन समझा जाता है हम जब किसी आदमी को पहले दर्जे का बेवकूफ कहना चाहते हैं तो उसे गधा कहते हैं। गधा सचमुच बेवकूफ है या उसके सीधेपन, उसकी निरापद सहिष्णुता ने उसे यह पदवी दे दी है, इसका निश्चय नहीं किया जा सकता। गायें सींग मारती हैं, ब्याई हुई गाय तो अनायास ही सिंहनी का रूप धारण कर लेती है। कुत्ता भी बहुत गरीब जानवर है, लेकिन कभी-कभी उसे भी क्रोध आ ही जाता है, लेकिन गधे को कभी क्रोध करते नहीं सुना, न देखा। जितना चाहो उसे मारो, चाहे जैसी खराब सड़ी हुई घास सामने डाल दो, उसके चेहरे पर कभी असंतोष की छाया भी न दिखाई देगी। वैशाख में चाहे एकाध बार कुलेल कर लेता हो; पर हमने तो उसे कभी खुश होते नहीं देखा। उसके चेहरे पर एक स्थायी विषाद छाया रहता है।

सुख-दुख, हानि-लाभ किसी दशा में भी उसे बदलते नहीं देखा। ऋषि-मुनियों के जितने गुण हैं, वह सभी उसमें पराकाष्ठा को पहुँच गए हैं, पर आदमी उसे बेवकूफ कहता है। सद्गुणों का इतना अनादर कहीं नहीं देखा। कदाचित सीधापन संसार के लिए उपयुक्त नहीं है। ***(CBSE 2021 Term-1)***

1. **लेखक यह निश्चय नहीं कर पाता कि गधा बेवकूफ है या सीधा, क्योंकि उसके अनुसार–**
   (क) गधा अपने-पराए की भावना से परे है
   (ख) गधा क्रोध व कुलेल नहीं करता है
   (ग) गधा सीधा व सहिष्णु होता है
   (घ) गधे के चेहरे पर हर्ष व विषाद होता है।
2. **गधे में ऋषि-मुनियों के कौन-कौन-से गुण देखने को मिलते हैं–**
   (क) जप-तप करना (ख) समानता का भाव
   (ग) असंतोष की भावना (घ) कुलेल करना।
3. **आशय स्पष्ट कीजिए–'उसके चेहरे पर एक स्थायी विषाद छाया रहता है '–**
   (क) गधा सदैव चुप रहता है, उसे खुश होते हुए कभी नहीं देखा गया
   (ख) गधे को बहुत बोझ ढोना पड़ता है, इसी कारण वह थक जाता है
   (ग) आदमी द्वारा दुर्व्यवहार करने व बेवकूफ कहने के कारण गधा दुखी है
   (घ) गधे के प्रसन्न मुख पर सदा स्थिर संतोष छाया रहता है।
4. **गद्यांश में प्रयुक्त शब्दों 'छाया, निश्चय, अनायास' के लिए क्रमशः उचित विलोम शब्द हैं–**
   (क) असंतोष, अनिश्चय, प्रयास
   (ख) शीतलता, अनिश्चय, सायास
   (ग) धूप, अनिश्चय, सायास
   (घ) वृक्ष, अनिश्चय, प्रयास।
5. **निम्नलिखित कथन (A) तथा कारण (R) को ध्यानपूर्वक पढ़िए। उसके बाद दिए गए विकल्पों में से कोई एक सही विकल्प चुनकर लिखिए–**

   कथन (A)–जानवरों में गधा सबसे बुद्धिहीन समझा जाता है।

   कारण (R)–जब हम किसी आदमी को महामूर्ख कहना चाहते हैं तो उसे गधा कहते हैं।

   (क) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों गलत हैं।
   (ख) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।
   (ग) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) उसकी गलत व्याख्या करता है।
   (घ) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं और कारण (R), कथन (A) की सही व्याख्या करता है।

उत्तर— **1.** (ग) **2.** (ख) **3.** (ग) **4.** (ग) **5.** (घ)।

(37) साहित्य की शाश्वतता का प्रश्न एक महत्त्वपूर्ण प्रश्न है। क्या साहित्य शाश्वत होता है? यदि हाँ, तो किस मायने में? क्या कोई साहित्य अपने रचनाकाल के सौ वर्ष बीत जाने पर भी उतना ही प्रासंगिक रहता है, जितना वह अपनी रचना के समय था? अपने समय या युग का निर्माता साहित्यकार क्या सौ वर्ष बाद की परिस्थितियों का भी युग-निर्माता हो सकता है। समय बदलता रहता है, परिस्थितियाँ और भावबोध बदलते हैं, साहित्य बदलता है और इसी के समानांतर पाठक की मानसिकता और अभिरुचि भी बदलती है। अतः कोई भी कविता अपने सामयिक परिवेश के बदल जाने पर ठीक वही उत्तेजना पैदा नहीं कर सकती, जो उसने अपने रचनाकाल के दौरान की होगी। कहने का तात्पर्य यह है कि एक विशेष प्रकार के साहित्य के श्रेष्ठ अस्तित्व मात्र से वह साहित्य हर युग के लिए उतना ही विशेष आकर्षण रखे, यह आवश्यक नहीं है। यही कारण है कि वर्तमान युग में इंगला पिंगला, सुषुम्ना, अनहद नाद आदि पारिभाषिक शब्दावली मन में विशेष भावोत्तेजन नहीं करती। साहित्य की श्रेष्ठता मात्र ही उसके नित्य आकर्षण का आधार नहीं है। उसकी श्रेष्ठता का युगयुगीन आधार हैं, वे जीवन मूल्य तथा उनकी अत्यंत कलात्मक अभिव्यक्तियाँ जो मनुष्य की स्वतंत्रता तथा उच्चतर मानव-विकास के लिए पथ-प्रदर्शक का काम करती हैं। पुराने साहित्य का केवल वही श्री-सौंदर्य हमारे लिए ग्राह्य होगा, जो नवीन जीवन-मूल्यों के विकास में सक्रिय सहयोग दे अथवा स्थिति रक्षा में सहायक हो। कुछ लोग साहित्य की सामाजिक प्रतिबद्धता को अस्वीकार करते हैं। वे मानते हैं कि साहित्यकार निरपेक्ष होता है और उस पर कोई भी दबाव आरोपित नहीं होना चाहिए, किंतु वे भूल जाते हैं कि साहित्य के निर्माण की मूल प्रेरणा मानव-जीवन में ही विद्यमान रहती है। जीवन के लिए ही उसकी सृष्टि होती है। तुलसीदास जब स्वांतः सुखाय काव्य-रचना करते हैं, तब अभिप्राय यह नहीं रहता कि मानव-समाज के लिए इस रचना का कोई उपयोग नहीं है, बल्कि उनके अंतःकरण में संपूर्ण संसार की सुख भावना एवं हित कामना सन्निहित रहती है, जो साहित्यकार अपने संपूर्ण व्यक्तित्व को व्यापक लोक जीवन में सन्निविष्ट कर देता है, उसी के हाथों स्थायी एवं प्रेरणाप्रद साहित्य का सृजन हो सकता है। ***(CBSE 2021 Term-1)***

1. **निम्नलिखित कथन (A) तथा कारण (R) को ध्यानपूर्वक पढ़िए। उसके बाद दिए गए विकल्पों में से कोई एक सही विकल्प चुनकर लिखिए–**

कथन (A)–कुछ लोग साहित्य की सामाजिक प्रतिबद्धता को स्वीकार करते हैं।

कारण (R)–उनके अनुसार साहित्यकार निरपेक्ष नहीं होता है।

(क) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों गलत हैं।
(ख) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) गलत है।
(ग) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।
(घ) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं और कारण (R), कथन (A) की सही व्याख्या करता है।

2. **नवीन जीवन-मूल्यों के विकास में सक्रिय सहयोग से आशय है–**

(क) स्वांतः सुखाय की कामना कर आगे बढ़ना
(ख) श्री-सौंदर्य को प्राथमिकता देकर आगे बढ़ना
(ग) नवाचार व मूल्यों को आत्मसात कर आगे बढ़ना
(घ) वर्तमान में साहित्य के माध्यम से आगे बढ़ना।

3. **'कोई साहित्य अपने रचनाकाल के सौ वर्ष बीत जाने पर भी उतना ही प्रासंगिक रहता है।' कथन के आधार पर उचित तर्क है–**

(क) साहित्य की श्रेष्ठता मात्र ही उसके नित्य आकर्षण का आधार नहीं है
(ख) संपूर्ण साहित्य का स्थायी व स्पष्ट आधार नहीं है
(ग) लोक कल्याणकारी, स्थायी एवं प्रेरणाप्रद साहित्य होने की दशा में
(घ) पारिभाषिक शब्दावली द्वारा स्पष्टीकरण करने की दशा में।

4. **'साहित्यकार निरपेक्ष होता है और उस पर कोई भी दबाव आरोपित नहीं होना चाहिए।' कथन किस मनोवृत्ति को प्रकट करता है–**

(क) सामाजिक कार्यकर्ता की विचारधारा
(ख) साहित्य की शाश्वत क्रियाशील विचारधारा
(ग) समाज के प्रति वचनबद्धता का अभाव
(घ) निरपेक्ष व्यक्तियों की सकारात्मकता।

5. **गद्यांश में प्रयुक्त 'मानवजीवन' समस्तपद का विग्रह एवं समास भेद होगा–**

(क) मानव या जीवन – द्वंद्व समास
(ख) मानव का जीवन – तत्पुरुष समास
(ग) मानवरूपी जीवन – द्विगु समास
(घ) मानव जो जीवन जीता है – अव्ययीभाव समास।

उत्तर— **1.** (क) **2.** (ग) **3.** (ग) **4.** (ग) **5.** (ख)।

(38) 'प्रबुद्ध भारत', दिसंबर 1898, को दिए एक साक्षात्कार में विवेकानंदजी ने बताया कि मैंने पृथ्वी के दोनों गोलार्द्धों का पर्यटन किया है। मेरा तो दृढ़ विश्वास है कि जिस जाति ने सीता को उत्पन्न किया, चाहे वह उसकी कल्पना ही क्यों न हो, उस जाति में स्त्री जाति के लिए इतना अधिक सम्मान और श्रद्धा है, जिसकी तुलना संसार में हो ही नहीं सकती। पाश्चात्य स्त्रियाँ ऐसे कई कानूनी बंधनों से जकड़ी हुई हैं, जिनसे भारतीय स्त्रियाँ सर्वथा मुक्त एवं अपरिचित हैं। भारतीय समाज में निश्चय ही दोष और अपवाद दोनों हैं। पर यही स्थिति पाश्चात्य समाज की भी है। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि संसार के सभी भागों में प्रीति, कोमलता और साधुता को अभिव्यक्त करने के प्रयत्न चल रहे हैं। भारतीय स्त्री-जीवन में बहुत सी समस्याएँ हैं और ये समस्याएँ बड़ी गंभीर हैं। परंतु इनमें से कोई भी ऐसी नहीं हैं जो 'शिक्षा' रूपी मंत्र-बल से हल न हो सके। पर हाँ, शिक्षा की सच्ची कल्पना हममें से कदाचित ही किसी ने की हो। मैं मानता हूँ कि सच्ची शिक्षा वह है जिससे मनुष्य की मानसिक शक्तियों का विकास हो। वह शब्दों का केवल रटना मात्र न हो। यह व्यक्ति की मानसिक शक्तियों का ऐसा विकास हो जिससे वह स्वयमेव स्वतंत्रतापूर्वक विचार करके उचित निर्णय कर सके। भारतीय स्त्रियों को ऐसी शिक्षा दी जाए जिससे वे निर्भय होकर भारत के प्रति अपने कर्तव्य को भली-भाँति निभा सकें और संघमित्रा, लीला, अहिल्याबाई और मीरा आदि महान भारतीय देवियों की परंपरा को आगे बढ़ा सकें, 'वीर-प्रसूता' बन सकें। ***(CBSE 2021 Term-1)***

1. **गद्यांश में समस्त विश्व द्वारा किए जाने वाले किन प्रयत्नों का उल्लेख है?**

(क) स्त्रियों को धार्मिक-सामाजिक शिक्षा दिए जाने के लिए किए जाने वाले प्रयास
(ख) लोगों में प्रेम, सज्जनता एवं संवेदनशीलता के विकास के लिए किए गए प्रयास
(ग) मानव जाति को धर्म-राजनीति की शिक्षा हेतु किए जाने वाले प्रयास
(घ) समस्त समस्याओं का समाधान धर्म में तलाशने हेतु किए जाने वाले प्रयास।

2. **''भारतीय समाज में निश्चय ही दोष और अपवाद दोनों हैं।'' विवेकानंद ने ऐसा क्यों कहा–**

(क) भारतीय समाज में महिलाओं के शोषित और सशक्त दोनों रूप होने के कारण।
(ख) भारतीय समाज में महिलाओं का बहुत अधिक शोषण होने के कारण
(ग) भारतीय समाज में महिलाओं के अत्यधिक धार्मिक होने के कारण।
(घ) भारतीय समाज में महिलाओं के अत्यधिक अशिक्षित होने के कारण।

3. **'सच्ची शिक्षा' की परिकल्पना में शामिल नहीं है–**

(क) धर्म-शिक्षा के माध्यम से सामाजिक समस्याओं का समाधान
(ख) महिलाओं की शिक्षा-प्राप्ति में समान रूप से भागीदारी
(ग) अभय, सजगता एवं कर्तव्यबोध के विकास हेतु शिक्षा
(घ) स्वतंत्र सोच एवं निर्णय क्षमता के विकास हेतु शिक्षा।

4. **निम्नलिखित कथन (A) तथा कारण (R) को ध्यानपूर्वक पढ़िए। उसके बाद दिए गए विकल्पों में से कोई एक सही विकल्प चुनकर लिखिए–**

कथन (A)–पाश्चात्य स्त्रियाँ कई कानूनी बंधनों से जकड़ी हुई हैं।

कारण (R)–भारतीय स्त्रियाँ ऐसे कानूनों से मुक्त और अपरिचित हैं।

(क) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं और कारण (R), कथन (A) की सही व्याख्या है।
(ख) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) उसकी गलत व्याख्या करता है।
(ग) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।
(घ) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों गलत हैं।

5. **'वीर-प्रसूता' का आशय है–**

(क) अपना निर्णय स्वयं लेने वाली
(ख) परंपराओं का निर्वाह करने वाली
(ग) वीरों को जन्म देने वाली
(घ) कर्तव्य का बोध रखने वाली।

उत्तर— **1.** (ख) **2.** (क) **3.** (क) **4.** (क) **5.** (ग)।

(39) सोना तपने पर कंचन बनता है। ठीक यही बात आदमी के साथ भी है। हमारे धर्मग्रंथों में कहा गया है कि दुनिया में सबसे दुर्लभ आदमी का शरीर है। सारे प्राणियों में आदमी को ऊँचा माना गया है और वह इसलिए कि आदमी के पास बुद्धि है, विवेक है। संसार में जितनी चीज़ें आविष्कृत हुई हैं, सब बुद्धि के ज़ोर पर हुई हैं। आज हजारों मील की यात्रा घंटों में हो जाती है। यह सब आदमी की बुद्धि से ही संभव हुआ है। जिसके पास इतनी चीज़ें हों वह धन या दुनियादारी की चीज़ों के पीछे भटके, यह उचित नहीं है। बुद्धि का प्रयोग उसे बराबर आगे बढ़ने के लिए करना चाहिए। जिन्होंने ऐसा किया है, उन्होंने मानवता की बड़ी सेवा की है। उनका नाम अमर हो गया है। धन का खोट आदमी को तब मालूम होता है, जब वह खरा बनने लगता है। खरा बनने का अर्थ यह नहीं है कि इंसान घर-बार छोड़ दे, जंगल में चला जाए और भगवान के चरणों में लौ लगाकर बैठा रहे। बहुत-से लोग ऐसा करते भी हैं, पर यह रास्ता सबका रास्ता नहीं है। दुनिया में ज़्यादातर लोगों का वास्ता अपने घर के लोगों से ही नहीं, दूसरों के साथ भी पड़ता है। उत्तम पुरुष वह है, जो अपनी बुराइयों को दूर करता है और नीति का जीवन बिताते हुए अपने देश और समाज के काम आता है, सबसे प्रेम करता है और सबके सुख-दुःख में काम आता है। ***(CBSE 2021 Term-1)***

1. **बुद्धि-विवेक का प्रयोग किस कार्य में होना चाहिए–**
   (क) सफ़र को आसान बनाने वाली खोजों में
   (ख) अधिक से अधिक धन-दौलत जुटाने में
   (ग) निरंतर स्वयं का विकास करते रहने में
   (घ) भौतिक सुख-सुविधाओं को प्राप्त करने में।
2. **सभी प्राणियों में मानव को सर्वश्रेष्ठ क्यों माना गया है–**
   (क) उसके पास मौजूद बुद्धि और विवेक के कारण
   (ख) पशुओं से भिन्न विशेष शारीरिक संरचना के कारण
   (ग) उसके पास मौजूद धन और दौलत के कारण
   (घ) उसके द्वारा की गई विविध खोजों के कारण।
3. **धन की निरर्थकता का अहसास कब होता है–**
   (क) जब उससे मनचाही वस्तु नहीं मिल पाती है
   (ख) घर-संसार का त्याग कर संन्यास ग्रहण करने पर
   (ग) यह पता चलने पर कि इससे प्राप्त सुख वास्तविक नहीं है
   (घ) यह पता चलने पर कि इसकी मौजूदगी खतरे के कारण है।
4. **निम्नलिखित कथन (A) तथा कारण (R) को ध्यानपूर्वक पढ़िए। उसके बाद दिए गए विकल्पों में से कोई एक सही विकल्प चुनकर लिखिए–**
   कथन (A)–सारे प्राणियों में आदमी को ऊँचा माना गया है।
   कारण (R)–वह इसलिए कि आदमी के पास बुद्धि और विवेक है।
   (क) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों गलत हैं।
   (ख) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।
   (ग) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) उसकी गलत व्याख्या करता है।
   (घ) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं और कारण (R), कथन (A) की सही व्याख्या करता है।
5. **'श्रेष्ठ' कौन है–**
   (क) प्रेम और मानवता में विश्वास करने वाला
   (ख) निरंतर अपना आर्थिक विकास करने वाला
   (ग) भक्ति और शक्ति में विश्वास करने वाला
   (घ) निरंतर अपना शैक्षणिक विकास करने वाला।

उत्तर— **1.** (ग) **2.** (क) **3.** (ग) **4.** (घ) **5.** (क)।

(40) मध्यप्रदेश के देवास जनपद में लोगों के संकल्प और पुरुषार्थ 1067 तालाब बनाए गए। पर्याप्त संख्या में तालाब न होने से मध्यप्रदेश में पानी की कमी बनी रहती है लेकिन देवास में पानी की किल्लत खत्म हो गई है। ऐसा ही संकल्प अगर देश के हर गाँव और कस्बे में रहने वाले लोगों में आ जाए तो पानी को लेकर हाहाकार की स्थिति किसी गाँव में नहीं होगी। परंपरागत तालाब संस्कृति को पुनर्जीवित किए बिना हर गाँव में तालाब संस्कृति का पुनर्वास नहीं हो सकता। आज देश के 254 जिलों में पानी की भारी किल्लत है। इससे यहाँ की आबादी को उसकी जरूरत के मुताबिक पानी नहीं मिल पा रहा है। पानी का अत्यधिक दोहन और पानी की खपत बढ़ने के कारण पिछले 30-40 वर्षों में पानी की समस्या तेज़ी से बढ़ी है। एक तरफ तो पानी की प्रति व्यक्ति माँग निरंतर बढ़ती जा रही है वहीं दूसरी ओर देश की आबादी भी लगातार बढ़ रही है। ऐसे में पानी की माँग बढ़ेगी और उसकी उपलब्धता कम होती जाएगी। केंद्रीय मौसम विज्ञान के अनुसार देश की कुल वार्षिक वर्षा 1170 मि०मी० होती है, वह भी महज़ तीन महीने में लेकिन इस अकूत पानी का इस्तेमाल हम महज़ 20% ही कर पाते हैं अर्थात् 80% पानी बिना इस्तेमाल यों ही बह जाता है। अगर बरसात के पानी को संरक्षित करने की योजना पर अमल करें तो पानी की कमी से ही छुटकारा नहीं मिलेगा बल्कि पानी को लेकर होने वाली राजनीति से भी हमेशा के लिए छुटकारा मिल जाएगा।

(CBSE 2021 Term-1)

1. **जल को लेकर होने वाली राजनीति को कैसे दूर किया जा सकता है–**
   (क) जल को लेकर कोरी राजनीति करके
   (ख) जल को लेकर राजनीति न करके
   (ग) जल संबंधी कानूनों का निर्माण करके
   (घ) जल संरक्षण की योजना पर अमल करके।
2. **देवास निवासियों की जल-समस्या का समाधान हुआ–**
   (क) जल संरक्षण हेतु व्यापक रूप से तालाबों का निर्माण करके
   (ख) जल संरक्षण हेतु व्यापक रूप से धरना-प्रदर्शन करके
   (ग) जल संरक्षण हेतु व्यापक रूप से राजनीति करके
   (घ) जल संरक्षण हेतु व्यापक रूप से कानून-निर्माण करके।
3. **निम्नलिखित कथन (A) तथा कारण (R) को ध्यानपूर्वक पढ़िए। उसके बाद दिए गए विकल्पों में से कोई एक सही विकल्प चुनकर लिखिए–**
   कथन (A)–आज देश के 254 जिलों में पानी की भारी किल्लत है।
   कारण (R)–यहाँ की आबादी को उसकी जरूरत के मुताबिक पानी नहीं मिल पा रहा है।
   (क) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) उसकी गलत व्याख्या करता है।
   (ख) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं और कारण (R), कथन (A) की सही व्याख्या करता है।
   (ग) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों गलत हैं।
   (घ) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।
4. **देश की जल संबंधी समस्या का सर्वोपयुक्त समाधान है–**
   (क) वर्षा के जल को संरक्षित करने की योजना बनाना
   (ख) वर्षा के जल को संरक्षित करने हेतु कानून बनाना
   (ग) वर्षा के जल को संरक्षित करने पर विचार-विमर्श करना
   (घ) वर्षा के जल को संरक्षित करने की योजना पर अमल करना।
5. **निम्नलिखित में से क्या, जल की बढ़ती किल्लत का कारण नहीं है–**
   (क) जल की बढ़ती खपत (ख) देश की बढ़ती आबादी
   (ग) तालाबों का संरक्षण (घ) जल का अत्यधिक दोहन।

उत्तर— **1.** (घ) **2.** (क) **3.** (ख) **4.** (घ) **5.** (ग)।

अभ्यास प्रश्न

निर्देश–निम्नलिखित गद्यांशों को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सही उत्तर विकल्प चुनकर लिखिए–

(1) हर वर्ष विश्व में करोड़ों लोग भूखे मर रहे हैं। उन्हें आवास के अभाव में खुले आसमान के नीचे चिलचिलाती धूप और सरदी को झेलना पड़ता है। भारत में भी ये समस्याएँ हैं। यहाँ की जनसंख्या के लिए भी जीवन की न्यूनतम आवश्यकताएँ उपलब्ध नहीं हैं। उसका सर्वप्रमुख कारण निरंतर अबाध गति से बढ़ती हुई जनसंख्या है। जनसंख्या-वृद्धि को नियंत्रित करने के लिए सरकारी स्तर पर जो भी कार्यक्रम अपनाए गए हैं, उन्हें जनता ने अपना कार्यक्रम नहीं माना है। लोगों ने समाज कल्याण विभाग को अनुदान देने वाला विभाग मान लिया है। सरकारी कर्मचारियों ने भी इस कार्यक्रम को नौकरी मानकर काम किया है। ज़रूरत यह है कि परिवार कल्याण के कार्य को सेवा कार्य मानकर किया जाए। ऐसा करने पर ही जनसंख्या नियंत्रण के कार्यक्रम सफल होंगे। जनसंख्या की बढ़ती दर पर नियंत्रण के लिए अपनाए गए कार्यक्रमों की असफलता के प्रमुख कारण हैं– शिक्षण का अभाव, धार्मिक परंपराएँ, सामाजिक अंधविश्वास, बाल विवाह और बहु विवाह। इन कारणों से उत्पन्न बाधाओं को स्पष्ट रूप से समझकर उनका निराकरण करने पर ही जनसंख्या वृद्धि पर नियंत्रण किया जा सकता है।

1. **विश्व में करोड़ों लोग किस दुर्दशा को भोग रहे हैं–**
   (क) वे भूखे मर रहे हैं
   (ख) उनके पास घर नहीं हैं
   (ग) वे खुले में सरदी-गरमी झेलते हैं
   (घ) उपर्युक्त सभी।
2. **निम्नलिखित कथन (A) तथा कारण (R) को ध्यानपूर्वक पढ़िए। उसके बाद दिए गए विकल्पों में से कोई एक सही विकल्प चुनकर लिखिए–**

   कथन (A)–भारत की जनसंख्या के लिए जीवन की न्यूनतम आवश्यकताएँ उपलब्ध नहीं हैं।

   कारण (R)–इसका कारण निरंतर अबाध गति से बढ़ती जनसंख्या है।

   (क) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों गलत हैं।
   (ख) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।
   (ग) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) उसकी गलत व्याख्या करता है।
   (घ) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं और कारण (R), कथन (A) की सही व्याख्या करता है।
3. **जनसंख्या-नियंत्रण के कार्यक्रमों की असफलता का कारण है–**
   (क) अशिक्षा और अंधविश्वास
   (ख) धार्मिक परंपराएँ
   (ग) बाल-विवाह और बहुविवाह
   (घ) उपर्युक्त सभी।
4. **जनसंख्या-नियंत्रण कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए जरूरी है–**
   (क) परिवार-कल्याण के कार्य को सेवा मानकर किया जाए
   (ख) सरकार द्वारा सख्त कानून बनाए जाएँ
   (ग) कर्मचारियों को दंडित किया जाए
   (घ) उपर्युक्त में से कोई नहीं।
5. **'सामाजिक' में प्रत्यय है–**
   (क) सम (ख) जिक
   (ग) इक (घ) अक।

(2) आत्मविश्वास सफलता का प्रतीक है। आत्मविश्वासी व्यक्ति सफलता को अपने पुरुषार्थ से उपार्जित न मानकर ईश्वरीय अनुदान मानता है। आत्मविश्वासी मनुष्य सफलता को अपने ही उपयोग में प्रयुक्त नहीं करता, अपितु औरों में भी बाँटता है। जिस किसी तरह से श्रेय, सफलता, यश-सम्मान पाने की प्रवृत्ति उसमें नहीं होती। आत्मविश्वास ऐसी संजीवनी है, जो व्यक्तित्व के तीनों पहलुओं-चिंतन, चरित्र और व्यवहार को प्रभावित करती है। लक्ष्य के प्रति विश्वास भी हमारी विचार-तरंगों को उसी ओर उन्मुख कर देता है। वह लक्ष्य का चयनकर सफलता पाता है। आत्मविश्वास का विकास एवं उपयोग विचारों और मान्यताओं के आधार पर होता है। हम जैसा स्वयं को मानेंगे, वैसा ही बनते चले जाएँगे। कायरता अथवा प्रखरता में से किसका वरण करना है? आत्मविश्वासी इन दोनों में उच्चतम का वरण करता है। वरण ही नहीं करता, अपितु उस पर बढ़ता चला जाता है। उसके पदचिह्न औरों के लिए पाथेय बन जाते हैं? आत्मशक्ति विकसित करने के लिए हमें दूसरों पर निर्भर नहीं रहना चाहिए। संदेह से दूर रहना चाहिए।

1. **सफलता के लिए किसका होना आवश्यक है–**
   (क) शक्ति का (ख) धन का
   (ग) आत्मविश्वास का (घ) साधन का।
2. **आत्मविश्वास को संजीवनी कहा गया है, क्योंकि–**
   (क) यह औषधि का काम करता है
   (ख) यह जीवन को सजाता है
   (ग) यह जीवन को दूभर कर देता है
   (घ) यह हमें नए जीवन की ओर उन्मुख करता है।
3. **हमारा स्वरूप वैसा ही बनता है–**
   (क) जैसा हम चाहते हैं
   (ख) जैसा हम कार्य करते हैं
   (ग) जैसा हम स्वयं को मानते हैं
   (घ) जैसा हम भोजन करते हैं।
4. **निम्नलिखित कथन (A) तथा कारण (R) को ध्यानपूर्वक पढ़िए। उसके बाद दिए गए विकल्पों में से कोई एक सही विकल्प चुनकर लिखिए–**

   कथन (A)–आत्मविश्वासी मनुष्य सफलता को अपने ही उपयोग में प्रयुक्त नहीं करता।

   कारण (R)–वह सफलता को औरों में भी बाँटता है।
   (क) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) गलत है।
   (ख) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।
   (ग) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों गलत हैं।
   (घ) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं और कारण (R), कथन (A) की सही व्याख्या करता है।
5. **आत्मशक्ति विकसित करने के लिए हमें क्या करना चाहिए–**
   (क) नित्य व्यायाम करना चाहिए
   (ख) पौष्टिक भोजन करना चाहिए
   (ग) संदेह से दूर रहना चाहिए
   (घ) स्वाध्याय करना चाहिए।

(3) विद्यार्थियों में बढ़ती अनुशासनहीनता के कारणों में संभवतः सर्वाधिक मुख्य कारण यह भी है कि प्रायः विद्यार्थी अनुशासन के लाभों से अपरिचित होते हैं। उन्हें ज्ञान नहीं होता कि अनुशासन से जीवन सुखी एवं शांत बन जाता है। अनुशासनहीनता का दूसरा कारण यह है कि आज की शिक्षा-प्रणाली में आचरण को केवल व्यक्तिगत विषय समझ लिया गया है। विद्यार्थियों को आचरण-संबंधी शिक्षा नहीं दी जाती है तथा पुस्तकीय ज्ञान को ही सबकुछ मान लिया जाता है।

फलतः विद्यार्थियों की चंचल मानसिक प्रवृत्ति निरंतर उद्दंडता की ओर उन्मुख होती चली जा रही है; अतः यह आवश्यक है कि हम अपनी शिक्षा-पद्धति में सुधार करें तथा आचारशास्त्र को ही आरंभिक कक्षाओं में अनिवार्य तथा उच्चकक्षाओं में वैकल्पिक विषय के रूप में स्थान दें। इसके साथ ही हमें विद्यार्थियों को यह बताना चाहिए कि अनुशासन किस प्रकार से उनके भावी जीवन के विकास में सहायक बन सकता है। हमें विद्यार्थियों को इस बात की शिक्षा देनी चाहिए कि अनुशासन के माध्यम से मन पर नियंत्रण करने की कला भी आती है। मन को अपने वश में रखने की कला सीख लेने से यह लाभ होता है कि जीवन में प्रगति के पथ पर बढ़ते समय कोई रुकावट नहीं आती, लेकिन जो व्यक्ति अपने मन पर शासन करने की कला में प्रवीण नहीं हो पाते, उन्हें सदैव परमुखापेक्षी रहना पड़ता है।

1. **विद्यार्थियों में बढ़ती अनुशासनहीनता का मुख्य कारण है–**
   (क) खेल में अत्यधिक रुचि होना
   (ख) अनुशासन के लाभों से परिचित न होना
   (ग) मन का अत्यधिक चंचल होना
   (घ) परिपक्वता का अभाव।
2. **विद्यार्थियों को अनुशासन के लाभों से परिचित कराना आवश्यक है, क्योंकि–**
   (क) इससे उनका जीवन सुखी एवं शांत बनता है
   (ख) वे पढ़ाई में रुचि लेने लगते हैं
   (ग) इससे उन्हें अनुशासन का महत्त्व ज्ञात होता है
   (घ) वे आदर्श विद्यार्थी बन जाते हैं।
3. **निम्नलिखित कथन (A) तथा कारण (R) को ध्यानपूर्वक पढ़िए। उसके बाद दिए गए विकल्पों में से कोई एक सही विकल्प चुनकर लिखिए–**

   कथन (A)–विद्यार्थियों को आचरण-संबंधी शिक्षा नहीं दी जाती है।

   कारण (R)–विद्यार्थियों की चंचल मानसिक प्रवृत्ति निरंतर उद्दंडता की ओर उन्मुख हो रही हैं।

   (क) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों गलत हैं।
   (ख) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।
   (ग) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) गलत है।
   (घ) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं और कारण (R), कथन (A) की सही व्याख्या करता है।
4. **मन को वश में रखने की कला सीखने का क्या लाभ है–**
   (क) जीवन में प्रगति-पथ निर्बाध हो जाता है
   (ख) कार्य-कुशलता का विकास होता है
   (ग) परमपद की प्राप्ति होती है
   (घ) आत्मबल प्राप्त होता है।
5. **परमुखापेक्षी किसे कहते हैं–**
   (क) जो दूसरों से मुँह फेर लेता है
   (ख) जो दूसरों की सहायता करता है
   (ग) जो दूसरों से सहायता की अपेक्षा करता है
   (घ) जो दूसरों की उपेक्षा करता है।

(4) 'प्रबुद्ध भारत', दिसंबर 1898, को दिए एक साक्षात्कार में विवेकानंदजी ने बताया कि मैंने पृथ्वी के दोनों गोलार्द्धों का पर्यटन किया है। मेरा तो दृढ़ विश्वास है कि जिस जाति ने सीता को उत्पन्न किया, चाहे वह उसकी कल्पना ही क्यों न हो, उस जाति में स्त्री जाति के लिए इतना अधिक सम्मान और श्रद्धा है, जिसकी तुलना संसार में हो ही नहीं सकती। पाश्चात्य स्त्रियाँ ऐसे कई कानूनी बंधनों से जकड़ी हुई हैं, जिनसे भारतीय स्त्रियाँ सर्वथा मुक्त एवं अपरिचित हैं। भारतीय समाज में निश्चय ही दोष और अपवाद दोनों हैं। पर यही स्थिति पाश्चात्य समाज की भी है। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि संसार के सभी भागों में प्रीत, कोमलता और साधुता को अभिव्यक्त करने के प्रयत्न चल रहे हैं। भारतीय स्त्री-जीवन में बहुत सी समस्याएँ हैं और ये समस्याएँ बड़ी गंभीर हैं। परंतु इनमें से कोई भी ऐसी नहीं हैं जो 'शिक्षा' रूपी मंत्र-बल से हल न हो सके। पर हाँ, शिक्षा की सच्ची कल्पना हममें से कदाचित ही किसी ने की हो। मैं मानता हूँ कि सच्ची शिक्षा वह है जिससे मनुष्य की मानसिक शक्तियों का विकास हो। वह शब्दों का केवल रटना मात्र न हो। यह व्यक्ति की मानसिक शक्तियों का ऐसा विकास हो जिससे वह स्वयमेव स्वतंत्रतापूर्वक विचार करके उचित निर्णय कर सके। भारतीय स्त्रियों को ऐसी शिक्षा दी जाए जिससे वे निर्भय होकर भारत के प्रति अपने कर्तव्य को भली-भाँति निभा सकें और संघमित्रा, लीला, अहिल्याबाई और मीरा आदि महान भारतीय देवियों के परंपरा को आगे बढ़ा सकें, 'वीर-प्रसूता' बन सकें।

1. **गद्यांश में समस्त विश्व द्वारा किए जाने वाले किन प्रयत्नों का उल्लेख है–**
   (क) स्त्रियों को धार्मिक-सामाजिक शिक्षा दिए जाने के लिए किए जाने वाले प्रयास
   (ख) लोगों में प्रेम, सज्जनता एवं संवेदनशीलता के विकास के लिए किए गए प्रयास
   (ग) मानव जाति को धर्म-राजनीति की शिक्षा हेतु किए जाने वाले प्रयास
   (घ) समस्त समस्याओं का समाधान धर्म में तलाशने हेतु किए जाने वाले प्रयास।
2. **''भारतीय समाज में निश्चय ही दोष और अपवाद दोनों हैं।'' विवेकानंद ने ऐसा क्यों कहा–**
   (क) भारतीय समाज में महिलाओं के शोषित और सशक्त दोनों रूप होने के कारण।
   (ख) भारतीय समाज में महिलाओं का बहुत अधिक शोषण होने के कारण
   (ग) भारतीय समाज में महिलाओं के अत्यधिक धार्मिक होने के कारण
   (घ) भारतीय समाज में महिलाओं के अत्यधिक अशिक्षित होने के कारण।
3. **'सच्ची शिक्षा' की परिकल्पना में शामिल नहीं है–**
   (क) धर्म-शिक्षा के माध्यम से सामाजिक समस्याओं का समाधान
   (ख) महिलाओं की शिक्षा-प्राप्ति में समान रूप से भागीदारी
   (ग) अभय, सजगता एवं कर्तव्यबोध के विकास हेतु शिक्षा
   (घ) स्वतंत्र सोच एवं निर्णय क्षमता के विकास हेतु शिक्षा।
4. **निम्नलिखित कथन (A) तथा कारण (R) को ध्यानपूर्वक पढ़िए। उसके बाद दिए गए विकल्पों में से कोई एक सही विकल्प चुनकर लिखिए–**

   कथन (A)–पाश्चात्य स्त्रियाँ कई कानूनी बंधनों से जकड़ी हुई हैं।

   कारण (R)–भारतीय स्त्रियाँ ऐसे कानूनों से मुक्त और अपरिचित हैं।

   (क) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं और कारण (R), कथन (A) की सही व्याख्या है।
   (ख) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) उसकी गलत व्याख्या करता है।
   (ग) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।
   (घ) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों गलत हैं।
5. **'वीर-प्रसूता' का आशय है–**
   (क) अपना निर्णय स्वयं लेने वाली
   (ख) परंपराओं का निर्वाह करने वाली
   (ग) वीरों को जन्म देने वाली
   (घ) कर्तव्य का बोध रखने वाली।